کتھارسس



ڈاکٹر شبنم عشائی

کتھارسس



ڈاکٹر شبنم عشائی

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

کتھارسس

(نظمیں)

ڈاکٹر شبنم عشائی

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

یہ کتاب جموں کشمیر اکیڈمی آف کلچر اینڈ لینگویجز
کے جزوی مالی تعاون سے شائع کی گئی۔

کتھارسس

(نظمیں)

ڈاکٹر شبنم عشائی

استعارہ پبلی کیشنز

۵۳۔اے، ذاکر باغ، اوکھلا روڈ، نئی دہلی۔۲۵

CATHARSIS

(Poems)

By: Dr. Shabnam Ashai
Ashai Manzil, Tapar Pattan-193121
(J&K)

Edition : 2008, Price : Rs : 250/-

نام کتاب	:	کتھارسس (نظمیں)
شاعرہ	:	ڈاکٹر شبنم عشائی
پتہ	:	عشائی منزل، تاپر پٹن۔۱۹۳۱۲۱ (جے اینڈ کے)
سال اشاعت	:	۲۰۰۸
تعداد	:	۵۰۰
قیمت	:	دوسو پچاس روپے
کمپوزنگ	:	محمد اکرام
مطبع	:	ایم۔آر پرنٹرز دریا گنج، نئی دہلی۔۲

ملنے کے پتے

- مکتبہ جامعہ لمیٹڈ، نئی دہلی، ممبئی، علی گڑھ
- ایجوکیشنل پبلشنگ ہاؤس، کوچہ پنڈت، دہلی۔۶
- موڈرن پبلشنگ ہاؤس۔۹، گولا مارکیٹ، دریا گنج، نئی دہلی۔۲
- مکتبہ دین وادب، امین الدولہ پارک، لکھنؤ
- الخلیل میموریل لائبریری، یتیم خانہ کمپلیکس ارریا۔۸۵۴۳۱۱
- بک امپوریم، سبزی باغ، پٹنہ۔۴

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

انتساب

قیوم طارق
کے نام

دیباچہ

'کتھارسس' کا انگلش میں جو مفہوم ہے اردو میں اسے کچھ اس طرح بیان کیا جاسکتا ہے:

اُمڈ اُمڈ کر آنے والے جذبات کا اخراج/ اظہار کہ نتیجتاً متوقع آثار کی کشمکش ظاہر ہو یا صورت حال میں دائمی راحت ملے۔

میں کوئی پیشہ ور نقاد یا دیباچہ نگار نہیں ہوں۔ میں ایک تخلیقی انسان ہوں۔ میں نے آج تک کسی کتاب کا دیباچہ نہیں لکھا۔ لیکن شبنم عشائی کی شدید خواہش تھی کہ میں اس کی کتاب ''کتھارسس'' کا دیباچہ ضرور لکھوں۔ مہینوں اسے ٹالتا رہا لیکن جب اس کی خواہش میں اضطراب کا ایک سمندر موجزن دیکھا تو میں نے اس کی کتاب کا دیباچہ لکھنے کا ارادہ کرلیا— دیباچہ لکھنے سے پہلے میں نے اس کی کتاب کا ایک ایک لفظ پڑھا، اس کے زیر، زبر اور پیش کے ساتھ ... پھر جانے کیوں میرے من کے بھیتر بہت سا تصوف پڑھنے کی خواہش ہوئی... اور میں نے تصوف کی ڈھیر ساری بھاری بھرکم گمبھیر کتابیں پڑھ لیں۔ یہ بھاری بھرکم گمبھیر کتابیں پڑھنے کی یوں ضرورت پیش آئی کہ شبنم، کشمیر کی رہنے والی ہے۔ کشمیر ازل سے سادھوؤں، سنتوں اور عارفاؤں کا مسکن رہا ہے اور شبنم کی تخلیق کی مٹی اسی کشمیر کی ادھار دار ہے۔ یہ حقیقت ہے کہ شبنم کی تخلیق کی آتما میں وہیں کی عارفائیں وشرام کرتی ہیں۔ ذرا شبنم کی یہ نظم پڑھئے اور دیکھئے کہ کس طرح وادی کشمیر کا تصوف، ایک قبر میں اُمڈ آیا ہے۔ اس کی چاہت بس ایک مٹھی خاک ہے۔ حوا ہے وہ،

दीबाचा
(भूमिका)

"कथारसेस" का इंगलिश में जो मफ़हूम है उर्दू में इसे कुछ इस तरह बयान किया जा सकता है:

उमड-उमड कर आने वाले जज़्बात का इख़्राज/इज़हार कि नतीजतन मुतवक़्क़े आसार की कश्मकश ज़ाहिर हो या सूरते हाल में दाइमी राहत मिले।

मैं कोई पेश-ावर नक़्क़ाद या दीबाचानिगार नहीं हूं। मैं एक तख़्लीक़कार हूं। मैंने आजतक किसी किताब का दीबाचा नहीं लिखा। लेकिन शबनम अशाई की शदीद ख़्वाहिश थी कि उसकी किताब "कथारसेस" का दीबाचा ज़रूर लिखूं। महीनों उसे टालता रहा लेकिन जब उसकी ख़्वाहिश में इज़्तेराब का एक समंदर मोजज़न देखा तो मैंने उसकी किताब का दीबाचा लिखने का इरादा कर लिया। दीबाचा लिखने से पहले मैंने उसकी किताब का एक-एक लफ़्ज़ पढ़ा, उसके ज़ेर, ज़बर और पेश के साथ... फिर जाने क्यों मेरे मन के भीतर बहुत सा तसव्वुफ़ पढ़ने की ख़्वाहिश हुई... और मैंने तसव्वुफ़ की ढेर सारी भारी भरकम गम्भीर किताबें पढ़ लीं। ये भारी भरकम गम्भीर किताबें पढ़ने की यूं ज़रूरत पेश आई कि शबनम, कशमीर की रहने वाली है। कशमीर अज़ल से साधुओं, संतों और आरिफ़ाओं का मस्कन रहा है और शबनम की तख़्लीक़ की मिट्टी उसी कशमीर की उधारदार है। ये हक़ीक़त है कि शबनम की तख़्लीक़ की आत्मा में वहीं की आरिफ़ाएं विश्राम करती हैं। ज़रा शबनम की ये नज़्म पढ़िए और देखिए कि किस तरह वादि-ए-कशमीर का तसव्वुफ़, एक क़ब्र में उमड आया है। उसकी चाहत बस एक मुठ्ठी ख़ाक है। हव्वा है वो, आदम

آدم علیہ السلام کی بائیں پسلی سے نکلی تھی جو ان کی ہمدوش تھی۔ وہ للہ عارفہ نہیں کہ کوئی تندور اسے پناہ دے... اسے تو بس ایک مٹھی خاک کی ضرورت ہے جو اسے پنہاں کر سکے۔ شبنم کی نظم یوں ہے:

چھت تو نہیں دی مجھے/ میری قبر پر/ ایک مٹھی مٹی/ ضرور ڈالنا/ میں ڈھک جاؤں گی!/ تم/ میرا لباس ہوتے ہوئے بھی/ مجھے/ عریاں کر گئے/ میں للہ عارفہ نہیں/ تمہارے اکیلے پن کو/ دور کرنے کی خاطر/ تمہاری بائیں پسلی سے نکلی تھی/ تمہاری/ شریک حیات ہوں میں/ جو جنت میں/ تمہارے/ ہم دوش رہا کرتی تھی/ اِس کی تصدیق/ تمہارے Tanent نے نہیں/ قرآنِ کریم نے کی ہے/ تم اپنی پسلی کا گھاؤ لیے/ خاک بہ سر/ پھرتے رہو/ میں للہ عارفہ نہیں/ کہ تندور مجھے پناہ دے/ میری قبر پر/ ایک مٹھی مٹی/ ضرور ڈالنا/ میں ڈھک جاؤں گی...

اوپر کی نظم سے یوں تو ظاہراً للہ عارفہ کی اسے ضرورت نہیں لیکن پھر بھی نظم کے باطن میں للہ عارفہ ہے۔ اس کے بعد میں ایک اور نظم کا حوالہ دوں گا جس میں کشمیر کا سارا درد ایک جگہ جمع ہو گیا ہے۔ کوئی اسے سہلا رہا ہے، کوئی سینے۔۔ لگا رہا ہے، کوئی ماں کی طرح اسے غم زدہ آنکھوں سے تک رہا ہے، کوئی سوگوار شفقت، آنکھوں میں آنسو بھرے باپ کی طرح تک رہا ہے... کسی نے اس کے ماتھے پر بوسہ دھر دیا ہے... وہ آج کی رات سونا چاہتی ہے، ایسی نیند جو سچی ہو، بلیک میلنگ اور جھوٹ سے عاری نیند... لیکن اس کے باوجود اس کو اپنے درد پر وشواس ہے اور یہی وشواس ہی تو وہ ہے یعنی درد، مکمل اور شفاف درد...

میرے سارے درد/ آج یکجا ہیں!/ کوئی مجھے سہلا رہا ہے/ تو کوئی/ سینے سے لگا رہا ہے/ کوئی ماں کی طرح/ میرے سرہانے بیٹھا ہے/ تو کوئی باپ جیسی/ شفیق نظروں سے/ مجھے پڑھ رہا ہے/ کوئی دُکھ کے ٹکور دے رہا ہے/ تو کوئی

अलैहिस्सलाम की बाएं पिस्ली से निकली थी जो उनकी हमदोश थी। वो लल्ला-आरिफ़ा नहीं कि कोई तंदूर उसे पनाह दे...उसे तो बस एक मुठ्ठी ख़ाक की ज़रूरत है जो उसे पिन्हां कर सके। शबनम की नज़्म यूं है:

छत तो नहीं दी मुझे/मेरी क़ब्र पर/एक मुट्ठी मिट्टी/ज़रूर डालना/मैं ढँक जाऊँगी!/तुम/मेरा लिबास होते हुए भी/ मुझे/ उरयां कर गए/मैं लल्ला-आरिफ़ा नहीं/तुम्हारे अकेलेपन को/ दूर करने की ख़ातिर/तुम्हारी बाईं पसली से निकली थी/तुम्हारी/शरीके हयात हूं मैं/जो जन्नत में/तुम्हारे/हमदोश रहा करती थी/इसकी तस्दीक़/ तुम्हारे tanent ने नहीं/कुराने करीम ने की है/तुम अपनी पसली का घाव लिए/ ख़ाक-ब-सर/ फ़िरते रहो/मैं लल्ला-आरिफ़ा नहीं/ कि तंदूर मुझे पनाह दे/ मेरी कब़र पर/ एक मुट्ठी मिट्टी/ ज़रूर डालना/ मैं ढँक जाऊँगी.....

ऊपर की नज़्म से तो यूं ज़ाहिरन लल्ला-आरिफ़ा की उसे ज़रूरत नहीं लेकिन फिर भी नज़्म के बातिन में लल्ला-आरिफ़ा है। उसके बाद में एक और नज़्म का हवाला दूंगा जिसमें कशमीर का सारा दर्द एक जगह जमा हो गया है। कोई उसे सहला रहा है, कोई सीने से लगा रहा है, कोई मां की तरह उसे ग़मज़दा आंखों से तक रहा है, कोई सौगवार शफ़क़त, आंखों में आंसू भरे बाप की तरह तक रहा है... किसी ने उसके माथे पर बोसा धर दिया है... वो आज की रात सोना चाहती है, ऐसी नींद जो सच्ची हो, बलैकमेलिंग और झूट से आरी नींद... लेकिन इसके बावजूद उसको अपने दर्द पर विश्वास है और यही विश्वास ही तो वो है यानी दर्द, मुकम्मल और शफ़्फ़ाफ़ दर्द...

मेरे सारे दर्द/ आज यकजा हैं!/ कोई मुझे सहला रहा है/ तो कोई/ सीने से लगा रहा है/ कोई माँ की तरह/ मेरे सिरहाने बैठा है/ तो कोई बाप जैसी/ शफ़ीक़ नज़रों से/ मुझे पढ़ रहा है/ कोई दुख के टकोर दे रहा है/ तो कोई बोसा!/ दर्द ही बस/ मेरे हैं/ मेरे अपने/ मेरे सगे/ ख़ुदा-र-आज/ मेरे अपनों की दुनिया में/ रिश्तों की/ कोई भयानक आवाज़/ न आने दो/

بوسہ!/ درد ہی بس/ میرے ہیں/ میرے اپنے/ میرے سگے/ خدا را آج/
میرے اپنوں کی دنیا میں/ رشتوں کی/ کوئی بھیانک آواز/ نہ آنے دو/ مجھے
کچھ پل/ درد کی آغوش میں/ ستانے دو/ یہ رشتوں کی طرح/ شک یا بلیک
میل/ نہیں کرتے/ مجھے گلے لگا کے/ تھپکی دیتے ہیں/ یہ درد/ کتنے گے ہیں!

قارئین! آپ نے نظم پڑھ لی۔ شبنم کی ایسی کئی نظموں کو پڑھنے کے بعد زبان مجبور ہو جاتی ہے، یہ کہنے کے لیے کہ شبنم عشائی اس وقت کی، اس دور کی، اب ایک اہم ترین شاعرہ بن چکی ہے۔ شبنم عشائی کی یہ کتاب کتھارسس، دراصل اس کی جیونی، کتابِ زیست ہے اس کی۔

شبنم عشائی کی کچھ نظمیں پڑھنے کے بعد جانے کیوں مجھے سلویا پلاتھ اور فروغ فرخ زاد کی نظمیں یاد آنے لگتی ہیں۔ وہ بھی تاعمر اپنی نظموں میں کتابِ زیست لکھتی رہیں۔ لیکن ان کی نظموں میں، ان کے جیون کی یاتراؤں میں بغاوت تو تھی ہی لیکن بے حجابی، عریانیت اور ہیجان بھی بلا کا تھا۔ سلویا پلاتھ اور فروغ فرخ زاد بہت بڑی شاعرہ تھیں اور ان کی زندگیوں کے تقاضے کچھ اور تھے۔ لیکن شبنم کی زندگی کے تقاضے کچھ اور۔ وہ بھی باغی ہے لیکن اس کی بغاوت میں ایک دُشالا ایک چنریا یا ایک کملی ضرور پنہاں رہتی ہے۔ اس کی اس پنہاں والی کیفیت یا اس کی ایک چنریا یا ایک شبنم کی تخلیق، زعفران کی کھیتی کرتی ہے۔ درد پھولوں کے ساتھ۔ تصوف اس کی تخلیق میں Integrated ہے۔ تصوف سے آزاد ہو کے آپ اس کی شاعری کو پڑھ نہیں سکتے کہ یہ آپ کو جھنجھلا کے رکھ دے گی... تصوف اور صبوحی اس کی نظموں میں کس طرح کن لفظ و معنی میں در آیا ہے۔ آیئے آپ بھی میرے ساتھ اس عمل میں شریک ہوں۔ یوں تو سارے لوگوں نے تصوف اور صوفی کو اپنے اپنے سیاق وسباق میں سمجھا ہے لیکن میں اور میرا دل تصوف کی انتہا حضرت ابوبکر صدیقؓ کو ہی مانتا ہے۔

ماسوا رب اور مخلوق کی طرف دل لگانا یا نظر کرنا نشانِ ہلاکت ہے اور رب کی

मुझे कुछ पल/ दर्द की आग़ोश में/ सुस्ताने दो/ यह रिश्तों की
तरह/ शक या ब्लैक-मेल/ नहीं करते/ मुझे गले लगा के/
थपकी देते हैं/ यह दर्द/ कितने सगे हैं!

क़ारईन! आपने नज़्म पढ़ ली। शबनम की ऐसी कई नज़्मों को पढ़ने के बाद ज़बान मजबूर हो जाती है, ये कहने के लिए कि शबनम अशाई इस वक़्त की, इस दौर की, एक अहम तरीन शायरा बन चुकी हैं। शबनम की ये किताब "कथारसेस", दरअसल उसकी जीवनी, किताबे ज़ीस्त है उसकी।

शबनम अशाई की कुछ नज़्में पढ़ने के बाद जाने क्यों मुझे सलविया-प्लाथ और फ़रोग़ फ़र्रुख़ज़ाद की नज़्में याद आने लगती हैं। वो भी ताउम्र अपनी नज़्मों में किताबे ज़ीस्त लिखती रहीं। लेकिन उनकी नज़्मों में, उनके जीवन की यात्राओं में बग़ावत तो थी ही लेकिन बे-हिजाबी, उरयानियत और हैजान भी बला का था। सलविया -प्लाथ और फ़राग़ फ़र्रुख़ज़ाद बहुत बड़ी शायरा थीं और उनकी ज़िंदगियों के तक़ाज़े कुछ और थे। लेकिन शबनम की ज़िंदगी के तक़ाज़े कुछ और। वो भी बाग़ी है लेकिन उसकी बग़ावत में एक दुशाला एक चुनरिया/या एक कमली ज़रूर पिन्हां रहती है। उसकी इस पिन्हां वाली कैफ़ियत या उसकी एक चुनरिया या एक शबनम की तख़्लीक़, ज़ाफ़रान की खेती करती है। दर्द फूलों के साथ। तसव्वुफ़ उसकी तख़्लीक में Integrated है। तसव्वुफ़ से आज़ाद हो के आप उसकी शायरी को पढ़ नहीं सकते कि ये आपको झुंझला के रख देगी... तसव्वुफ़ और सबूही उसकी नज़्मों में किस तरह किन लफ़्ज़-व-मानी में दर आया है। आइए आप भी मेरे साथ इस अमल में शरीक हों। यूं तो सारे लोगों ने तसव्वुफ़ और सूफ़ी को अपने अपने सियाक़-व-सबाक़ में समझा है लेकिन मैं और मेरा दिल तसव्वुफ़ की इंतेहा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को मानता है।

मासिवा रब और मख़्लूक़ की तरफ़ दिल लगाना या नज़र करना निशाने हिलाकत है और रब की तरफ़ रुजू होना अलामते मिलकियत

طرف رجوع ہونا علامتِ ملکیت ہے۔ یہی تصوف کو ماننے والے کی شان ہے۔
صوفی کا دل ہر کدورت سے پاک ہو۔ صفائی کی ضد، مکدر ہے۔ مکدر دنیا ہونا صفتِ بشری میں داخل ہونا ہے اور صفت بشری سے بالاتر ہونا ہی تصوف کو دریافت رکھنا ہے۔ صفائی، صفت بشریہ سے نہیں۔ یہ اس لیے کہ بشر کی تخلیق مٹی سے ہوئی ہے اور مٹی کے خواص ذاتی میں کدورت و کثافت ہے۔ اس لیے حصولِ صفا افعال و اعمال سے نہیں ہوسکتا۔ اور بشر کی صفت مجاہدہ و ریاضت ہے جس کا زائل ہوجانا ناممکن ہے۔ کیا خوب حضرت ہجویری نے اپنی لازوال شہرۂ آفاق کتاب ''کشف المحجوب'' میں لکھا ہے:

''صوفی وہ ہے کہ جب وہ اپنی ذات سے نابینا ہوجاتا ہے تو ذاتِ واجب کے ساتھ بینا ہوجاتا ہے۔

صوفی وہ ہے جس کے پاس وہ اثبات ہو جس کی نفی نہیں اور وہ نفی ہے جس کا اثبات نہیں۔

تصوف اسم اعظم نہیں۔ یہ ایک خاص خصلت ہے۔ یعنی تصوف اگر ایک رسمی چیز ہوتا تو ریاضت سے حاصل ہوسکتا تھا۔ امرِ علم ہوتا تو محض تعلیم و تعلم سے حاصل ہوجاتا۔ تصوف ایک خاص خصلت ہے اور جب تک یہ خصلت خود اپنے اندر نہ پیدا کرے اس وقت تک وہ حاصل نہیں ہوتا۔

صوفی نہ کسی کا مالک ہوتا ہے نہ ملک نہ ملکیت۔''

تصوف اور صوفی کی پانچ تعریفوں کے اندر میں یہ کہنا چاہوں گا کہ کس طرح فقر، رقص، جامہ دری، وجد، وجود، اور تواجد شبنم عشائی کے تخلیقی لاشعور سے مربوط ہوجاتے ہیں۔

سو سال یا اس سے اُدھر کی بات ہے کہ ہندوستان میں ایک رسم بہت عام تھی۔ ستی کی رسم۔ جب کسی عورت کا خاوند مرتا تھا تو اس کے ساتھ، عورت خود اپنے آپ کو آگ میں جھونک دیتی تھی۔ اگر وہ ایسا نہیں کرتی تھی تو اسے زبردستی مجبور کیا جاتا تھا کہ

है। यही तसव्वुफ़ को मानने वाले की शान है।

सूफ़ी का दिल हर कदूरत से पाक हो। सफ़ाई की ज़िद, मुकद्दर है। मुकद्दरे दुनिया होना सिफ़ते बशरी में दाख़िल होना है और सिफ़ते बशरी से बालातर होना ही तसव्वुफ़ को दरियाफ़्त रखना है। सफ़ाई, सिफ़ते बशरिया से नहीं। ये इसलिए कि बशर की तख़्लीक़ मिट्टी से हुई है और मिट्टी के ख़वासे ज़ाती में कुदूरत-व-कसाफ़त है। इस लिए हुसूले सफ़ा अफ़आल-व-आमाल से नहीं हो सकता। और बशर की सिफ़त मुजाहिदा व रियाज़त है जिसका ज़ायल हो जाना ना-मुमकिन है। क्या ख़ूब हज़रत हजवेरी ने अपनी लाज़वाल शोहर-ए-आफ़ाक़ किताब "कशफ़ुल-महजूब" में लिखा है:

> "सूफ़ी वो है कि जब वो अपनी ज़ात से नाबीना हो जाता है तो ज़ाते वाजिब के साथ बीना हो जाता है।
>
> सूफ़ी वो है जिसके पास वो इस्बात हो जिसकी नफ़ी नहीं और वो नफ़ी है जिसका इस्बात नहीं।
>
> तसव्वुफ़ इस्मे-आज़म नहीं। ये एक ख़ास ख़सलत है। यानी तसव्वुफ़ अगर एक रस्मी चीज़ होता तो रियाज़त से हासिल हो सकता था। अमरन इल्म होता तो महज़ तालीम-व-तअल्लुम से हासिल हो जाता। तसव्वुफ़ एक ख़ास ख़स्लत है और जब तक ये ख़स्लत ख़ुद अपने अंदर न पैदा करे उस वक़्त तक वो हासिल नहीं होता।
>
> सूफ़ी न किसी का मालिक होता है, न मुल्क, न मिलकियत।"

तसव्वुफ़ और सूफ़ी की पांच तारीफ़ों के अंदर मैं ये कहना चाहूंगा कि किस तरह फ़क्र, रक़्स, जामादरी, वज्द, वजूद और तवाजुद शबनम अशाई के तख़्लीक़ी लाशऊर से मरबूत हो जाते हैं।

सौ साल या उससे उधर की बात है कि हिन्दुस्तान में एक रस्म बहुत आम थी, सती की रस्म। जब किसी औरत का ख़ाविंद मरता था तो उसके साथ, औरत ख़ुद अपने आपको आग में झोंक देती थी। अगर वो ऐसा नहीं करती थी तो उसे ज़बरदस्ती मजबूर किया जाता था कि

وہ آگ کی نذر ہو جائے اور اس کے خاوند کے ساتھ اس کی بھی استھیاں تیار ہو جائیں۔ یہ واقعہ ابن بطوطہ نے بھی اپنے سفرنامہ ''عجائب الاسفار'' میں لکھا ہے کہ کس طرح اس نے یہ واقعہ خود اپنی آنکھوں سے دیکھا اور بے ہوش ہو گیا۔

خارجی ادب میں سلویا پلاتھ اور فروغ فرخ زاد نے بھی Intellectually ادب کو اپنا 'پتی' مان کر اپنے آپ کو ان گنت بار 'ستی' کیا ہے۔ اردو ادب میں بھی ایک عورت ایسی ہے جو اپنے آپ کو بار بار ستی، کرتی ہے۔ اسے خود کو زندہ جلانے کا بہت شوق ہے اور اس سے وہ ذرا بھی دل برداشتہ نہیں ہوتی بلکہ Intellectually اور Powerful ہو جاتی ہے۔ اس کے اس ستی ہونے میں مجھے اس Surrealism میں وہ کیفیت وجد اور تواجد نظر آتا ہے جو خوشی سے ہو یا غم سے یا تکلیف سے یا آرام سے یا وجود دل سے جو غم کا آلہ ہے۔ واجد کی صفت یہ ہے کہ بحالتِ حجاب جوشِ شوق کے سبب وجود میں آئے۔ موجودہ کتاب کی خالق شبنم عشائی اس وقت اردو کی ایک اہم ترین شاعرہ ہے۔ اس نے اپنی موجودہ کتاب میں Surrealistic شاعری کے ذریعہ جو تصوف اخذ کیا ہے اس پر حجاب کی ایک جھینی جھینی چنریا تو دکھائی دیتی ہے، مکڑی کا جالا تو نظر آتا ہے لیکن مکڑی نظر نہیں آتی۔ شاعری کی پہلی غیر مانوس اور بڑی خوبی یہ ہے جو اس کی شاعری میں ہے یعنی وجد اور وجود کی surrealistic کیفیت یہ surrealistic کیفیت ان کو دوسرے شاعروں سے علیحدہ کرتی ہے۔ اجنبی اور غیر مانوس بناتی ہے اور دل کی دھڑکنوں کے اندر بھی یہ شاعری نظر آتی ہے... آیئے موجودہ کتاب کی پہلی دس نظموں کا مطالعہ کریں کہ اس کی Surrealistic کیفیت میں کس طرح وجد، وجود اور تواصل ظاہر ہوا ہے۔ یہ تو سب ہی جانتے ہوں گے کہ وجد اور وجود مصدر ہیں۔ ایک کے معنی غم اور دوسرے کے معنی پانے کے ہیں۔ جب دونوں کا فاعل ایک ہو، تو سوائے مصدر کے کوئی اور فرق نہیں رہتا۔ وجد اس غم کو کہتے ہیں جو غیر کی محبت کی وجہ

वो आग के नज़्र हो जाए। और उसके ख़ाविंद के साथ उसकी भी अस्थियां तैयार हो जाएं।

ये वाक़िया इब्ने-बतूता ने भी अपने सफ़रनामा "अजाइबुल-असफ़ार" में लिखा है कि किस तरह उसने ये वाक़िया ख़ुद अपनी आंखों से देखा और बेहोश हो गया।

ख़ारजी अदब में सलविया-प्लाथ और फ़राग़ फ़र्रुख़ज़ाद ने भी Intellectually अदब को अपना 'पति' मानकर अपने आपको अनगिनत बार 'सती' किया है। उर्दू अदब में एक औरत ऐसी है जो अपने आपको बार-बार सती करती है। उसे ख़ुद को ज़िंदा जलाने का बहुत शौक़ है और उस से वो ज़रा भी दिलबर्दश्ता नहीं होती बल्कि Intellectually और Powerful हो जाती है। उसके इस सती होने में मुझे इस Surrealism में वो कैफ़ियते वजद और तवाजुद नज़र आता है जो ख़ुशी से हो या ग़म से या तक्लीफ़ से या आरम से या वजूदे दिल से जो ग़म का आला है। वाजिद की सिफ़त ये है कि बहालते हिजाब जोशे शौक़ के सबब वजूद में आए। मौजूदा किताब की ख़ालिक़ शबनम अशाई इस वक़्त उर्दू की एक अहम तरीन शायरा हैं। उसने अपनी मौजूदा किताब में Surrealistic शायरी के ज़रिया जो तसव्वुफ़ अख़्ज़ किया है उसपर हिजाब की एक झीनी-झीनी चुनरिया तो दिखाई देती है, मकड़ी का जाला तो नज़र आता है लेकिन मकड़ी नज़र नहीं आती। शायरी की पहली ग़ैर-मानूस और बड़ी ख़ूबी ये है जो उसकी शायरी में है यानी वज्द और वजूद की surrealistic कैफ़ियत ये surrealistic कैफ़ियत उनको दूसरे शायरों से अलाहिदा करती है। अजनबी और ग़ैर-मानूस बनाती है और दिल की धड़कनों के अंदर भी ये शायरी नज़र आती है... आइए मौजूदा किताब की पहली दस नज़्मों का मुताला करें कि उसकी surrealistic कैफ़ियत में किस तरह वज्द, वजूद, और तवासुल ज़ाहिर हुआ है। ये तो सब ही जानते होंगे कि वज्द और वजूद मसदर हैं। एक के मानी ग़म और दूसरे के मानी पाने के हैं। जब दोनों का फ़ाइल एक हो, तो सिवाए मसदर के कोई

پر ہو۔ وجد کی کیفیت بیان نہیں کی جا سکتی اس لیے کہ وہ الم ہے اور اسے دیکھنے کے بعد الم کو قلم میں بند نہیں کیا جا سکتا۔ اس کا مطلب یہ ہوا کہ وجد طلب اور مطلوب میں ایک سرّ ی راز ہوتا ہے جس کا بیان کشف غیر میں ہوا ہے۔ اور کیفیت سے وجود شان ہے اور اشارہ کا اس میں دخل نہیں۔ کیونکہ یہ مشاہدہ ہے خوشی ہے اور خوشی طلب میں نہیں ملتی۔ وجود ایک فضیلت ہے جو لوگوں سے محبّ کو ملتی ہے۔ اس میں اشارہ کو دخل نہیں۔ حضرت عثمانی ہجویری کے نزدیک وجد الم دیتا ہوا محسوس ہوتا ہے۔ مثالیں حاضر ہیں:

تعبیریں اتنی بھیانک ہیں/ خواب سہانے کیوں تھے؟/ سہانے خواب/
سہانے دنوں کی طرح/ رات کی سیاہی میں/ کھو کیوں نہیں جاتے؟/ رات
اپنی سیاہی میں/ رازوں کو چھپا لیتی ہے/ دلوں کے زخم/ اپنی سیاہی سے کیوں
نہیں بھرتی؟/ زبانوں کے زخم/ دلوں کی توڑ پھوڑ کرنے سے/ باز نہیں
آتے/ کسی لہجے میں اتنا ظرف نہیں/ کہ ٹوٹے ہوئے دلوں کو جوڑیں/ ٹوٹے
ہوئے دل بھیانک تعبیروں کو/ دانتوں سے جی لیتے ہیں/ پر ہر دھڑکن
پوچھتی ہے/ کہ خواب سہانے کیوں تھے؟

اوپر میں نے 'ستی' ہونے کی بات کی تھی۔ شبنم عشائی کس طرح تخلیق کو اپنا پتی مان کر Intellectually ستی ہونا چاہتی ہیں۔

جیسا کہ میں نے پہلے کہا، شبنم عشائی کی شاعری اس مخصوص تصوف کے جذبات کی تخلیق ہے جس کی ایک مثال للہ عارفہ کی شاعری ہے۔ جہاں تک شبنم عشائی کی اپنی فکر ہے، وہ وجد اور وجدان کے ساتھ ایک طرح کے ایسے حزن کا آئینہ ہے جو حسن کو اور زیادہ معنی خیز بنا دیتا ہے۔ یہی معنی خیزی شبنم کی نظموں کا اصلی احوال ہے۔ شبنم مکمل طور پر ایک حزنیاتی کیفیت کو اپنی نظموں میں اس طرح پیش کرتی ہے، جو وجود کا فلسفہ اور زندگی کا طور ہے۔ غور کیا جائے تو یہ کیر کے گارد کے فلسفہ کا اثر ہے۔ شبنم نے وجودی

और फ़र्क़ नहीं रहता। वज्द उस ग़म को कहते हैं जो ग़ैर मोहब्बत की वजह पर हो। वज्द की कैफ़ियत बयान नहीं की जा सकती इस लिए कि वो अलम है और उसे देखने के बाद अलम को क़लम में बंद नहीं किया जा सकता। इसका मतलब ये हुआ कि वजद तलब और मतलूब में एक सिर्‌री राज़ होता है जिसका बयान कशफ़े ग़ैर में हुआ है और कैफ़ियत से वज़ूदे शान है और इशारा का इसमें दख़ल नहीं। क्योंकि ये मुशाहदा हैं ख़ुशी है और ख़ुशी तलब में नहीं मिलती। वजूद एक फ़ज़ीलत है जो लोगों से मुहिब को मिलती है। इसमें इशारा को दख़ल नहीं। हज़रत उस्मान हजवेरी के नज़दीक वज्द अलम देता हुआ महसूस होता है। मिसालें हाज़िर हैं:

> ताबीरें इतनी भयानक हैं/ ख़्वाब सुहाने क्यों थे?/ सुहाने ख़्वाब/ सुहाने दिनों की तरह/ रात की सियाही में/ खो क्यों नहीं जाते?/ रात अपनी सियाही में/ राज़ों को छुपा लेती है/ दिनों के ज़ख़्म/ अपनी सियाही से क्यों नहीं भरती?/ ज़बानों के ज़ख़्म/ दिलों की तोड़-फ़ोड़ करने से/ बाज़ नहीं आते/ किसी लहजे में इतना ज़र्फ़ नहीं/ कि टूटे हुए दिलों को जोड़े/ टूटे हुए दिल भयानक ताबीरों को/ दाँतों से जी लेते हैं/ पर हर धड़कन पूछती है/ कि ख़्वाब सुहाने क्यों थे?

ऊपर मैंने 'सती' होने की बात की थी। शबनम अशाई किस तरह तख़्लीक़ को अपना पती मानकर intellectually सती होना चाहती हैं।

जैसा कि मैंने पहले कहा, शबनम अशाई की शायरी उस मख़्सूस तसव्वुफ़ के जज़्बात की तख़्लीक है जिसकी एक मिसाल लल्ला-आरिफ़ा की शायरी है। जहां तक शबनम अशाई की अपनी फ़िक्र है, वो वज्द और विजदान के साथ एक तरह के ऐसे हुज़्न का आइना है जो हुस्न को और ज़्यादा मानी ख़ेज़ बना देता है। यही मानी ख़ेज़ी शबनम की नज़्मों का असली अहवाल है। शबनम मुकम्मल तौर पर एक हुज़नियाती कैफ़ियत को अपनी नज़्मों में इस तरह पेश करती है, जो वजूद का फ़लसफ़ा और ज़िंदगी का तौर है। ग़ौर किया जाए तो ये

فلسفہ پر ریسرچ کی ہے، اُن کا تھیسس شائع ہو چکا ہے۔ اُس میں بھی کیر کے گارد اور سارتر کے بہت سے حوالے موجود ہیں۔ وجودی فلسفہ کی ایک بنیاد وجود کی تلاش اور شناخت تھی تو دوسری جانب اُس انسان کی تلاش جو آج دنیا میں مفقود ہو چکا ہے۔ جو محض ایک مثال ہو کر رہ گیا ہے۔ عمومیت میں اس طرح گم ہوا ہے کہ اُس کی شناخت ہی ممکن نہیں۔ سوچنے والے تخلیقی ذہن کو اس کی تشویش ہے۔ اس لیے شبنم ایک نظم میں اس کا اظہار اس طرح کرتی ہے:

جانے/ کہاں دب گئے ہیں/ انسان کی کھوج میں/ میرا چہرہ/ پتھر ہو گیا/
جانوروں کی/ بھیانک آوازوں میں/ میں نے میری آواز کھودی/ پتھر چہرہ/
بن آواز کا وجود/ کتنا بھیانک ہوگا/ تمہیں معلوم بھی ہے؟/ جو ہے تو/ دیکھتے
کیا ہو/ تم تو خدا ہو!

شبنم کی دیگر نظموں کی طرح اس نظم کا بھی کوئی عنوان نہیں ہے۔ ایسے تخلیق کار جو اپنے انفرادی احساس کو تخلیق میں جاری و ساری رکھتے ہیں، ان کی نظموں میں عام طور پر عنوان نہیں ہوتے یہ بھی شبنم کی انفرادیت ہے۔ اس لیے کہ شاعری کا کوئی خاص عنوان نہیں ہوتا اور نہ کوئی موضوع ہوتا ہے۔ نظمیں تو اس لیے ہیں کہ وہ اس کا وجود ہیں، اس میں موضوعات تلاش کرنا لاحاصل ہے۔

اِس تناظر میں وادیٔ کشمیر میں ریشیت کی روایت کو بھی یاد رکھنا ہوگا۔ ریشیت تصوف کی ایسی کیفیت ہے جس میں صوفی کا وجود اپنی کائنات میں اس طرح پیوست ہو جاتا ہے کہ ایک کو دوسرے سے جدا کرنا ممکن نہیں ہوتا۔ یہ ایک منفرد فکر ہے جو وادیٔ کشمیر کے تصوف کے لیے ہی مخصوص ہے۔ شبنم کی فکر پر ریشیت کا بڑا گہرا عکس موجود ہے۔ وادیٔ کشمیر خود اپنے منظر نامے کے لحاظ سے قدرت کی شاعری ہے۔ حزن زدہ صبح و شام، دھرتی کا بے پناہ نکھرا ہوا جوبن، خاموش اور پُرسکون گہری ہری وادی، جس کے

क्रेके गार्द के फ़लसफ़ा का असर है। शबनम ने वजूदी फ़लसफ़ा पर रिसर्च की है, उनका थेसिस शाया हो चुका है। उसमे भी कीरके गार्द और सारतर के बहुत से हवाले मौजूद हैं। वजूदी फ़लसफ़ा की एक बुनियाद वजूद की तलाश और शनाख़्त थी तो दूसरी जानिब उस इंसान की तलाश जो आज दुनिया में मफ़कूद हो चुका है। जो महज़ एक मिसाल होकर रह गया है। उमूमियत में इस तरह गुम हुआ है कि उसकी शनाख़्त ही मुमकिन नहीं। सोचने वाले तख़्लीक़ी ज़िहन को उसकी तश्वीश है। इसलिए शबनम एक नज़्म में उसका इज़्हार इस तरह करती है:

जाने/ कहाँ दब गए हैं/ इंसान की खोज में/ मेरा चेहरा/ पत्थर हो गया / जानवरों की/ भयानक आवाज़ों में/ मैंने मेरी आवाज़ खो दी/ पत्थर चेहरा/ बिन आवाज़ का वजूद/ कितना भयानक होगा/ तुम्हें मालूम भी है?/ जो है तो / देखते क्या हो/ तुम तो खुदा हो!

शबनम की दीगर नज़्मों की तरह इस नज़्म का भी कोई उंवान नहीं है। ऐसे तख़्लीक़कार तो अपने इंफ़िरादी एहसास को तख़्लीक़ में जारी व सारी रखते हैं, उनकी नज़्मों में आम तौर पर उंवान नहीं होते। ये भी शबनम की इंफ़िरादियत है। इस लिए कि शायरी का कोई ख़ास उंवान नहीं होता और न कोई मौज़ूअ होता है। नज़्में तो इस लिए हैं कि उसका वजूद हैं, उसमें मौज़ूआत तलाश करना लाहासिल है।

इस तनाज़ुर में वादि-ए-कशमीर में रेशियत की रिवायत को भी याद रखना होगा। रेशियत तसव्वुफ़ की ऐसी कैफ़ियत है जिसमें सूफ़ी का वजूद अपनी काइनात में इस तरह पैवस्त हो जाता है कि एक को दूसरे से जुदा करना मुमकिन नहीं होता। ये एक मुंफ़रिद फ़िक्र है जो वादि-ए-कशमीर के तसव्वुफ़ के लिए ही मख़्सूस है। शबनम की फ़िक्र पर रेशियत का बड़ा गहरा अक्स मौजूद है। वादि-ए-कशमीर खुद अपने मंज़रनामे के लिहाज़ से कुदरत की शयरी है। हुज़्न ज़दा सुब्ह-व-शाम, धरती का बेपनाह निखरा हुआ जोबन, ख़ामोश और

قلب میں اضطراب بھی ہے اور تشکیک بھی۔ بہت سے سوالات ہیں جو منظروں میں نمایاں ہیں۔ اس تمام اضطراب کو شبنم نے بھی اپنی شاعری میں سمویا ہے، اور لسانی سطح پر اضطراب کو سوالوں کے گرداب بنا دیا ہے۔ شبنم کے یہ سوالات کچھ یوں نمایاں ہوئے ہیں:

جانتے ہو/ تمہاری ایک تخلیق کو/ کسی خیال/ کسی من/ نہ کسی گھر میں/ جگہ ملی/
جہان فانی میں/ سرگرداں/ خاک بسر/ پھرتی رہی/ جانتے ہو/ تمہاری ایک
تخلیق کی/ جیب میں/ مکاری کا کوئی/ سکہ نہیں/ کہ وہ روٹی/ یا رشتے سے/
آشنا ہو/ کائنات میں/ تمہاری ایک تخلیق/ ایسے اکیلی ہے/ جیسے تم!

تنہائی صرف کائنات کا یا کائنات میں زندگی گزارنے والوں کا نہیں خود کائنات بنانے والے کا بھی مسئلہ ہے۔ اور یہ مسئلہ شبنم عشائی کو ایک وجودی فکر محسوس ہوتا ہے۔ اور یہی احساس اُن کی شاعری بن جاتا ہے۔

شبنم عشائی نے اپنی شاعری کے پہلے مجموعے سے تازہ ترین مجموعے تک اپنے اسی تجسس کو برقرار رکھا ہے۔ انہوں نے عمومی سطح پر اُتر کر کبھی شعری محفلوں یا رسالوں سے مصالحت نہیں کی۔ اپنے ردم کو برقرار رکھا۔ سست روی کے ساتھ ٹھہر ٹھہر کر اپنی بات کہنا اور شبنم نے اپنی تخلیق کو، نئے زمانے کی روش کی طرح تیز رفتار بنانے کی کوشش نہیں کی۔

آئی۔ اے۔ رچرڈ نے اپنے ایک مضمون میں یہ سوال اٹھایا تھا کہ کوئی ایک نظم کہاں مکمل ہوتی ہے یا اس میں کتنا حصہ فالتو ہے۔ اس کا تعین بہت ضروری ہے۔ لیکن یہ مسئلہ قاری کی تفہیم اور تخلیق کار کے احساس کا ہے۔ اس لیے اِس کا حق کسے حاصل ہونا چاہیے۔ شبنم عشائی کی نظمیں اس کا بڑا مکمل جواب اور جواز ہیں۔ وہ نظم کو اپنے ٹھہرے ہوئے ردم سے شروع کرتی ہیں، پھر آہستہ روی کے ساتھ آگے بڑھتی ہیں، اور آخری مصرع تک پہنچ کر اچانک احساس ہوتا ہے کہ نظم مکمل ہوگئی اور چونکانے والی کیفیت کو پڑھنے والے کے احساس پر چھوڑ دیا۔ مثلاً:

पुरसुकून गहरी हरी वादी, जिसके क़ल्ब में इज़्तेराब भी है और तशकीक भी। बहुत से सवालात हैं जो मंज़रों में नुमायां हैं। इस तमाम इज़्तेराब को शबनम ने भी अपनी शायरी में समोया है और लिसानी सतह पर इज़्तेराब को सवालों के गर्दाब बना दिया है। शबनम के ये सवालात कुछ यूं नुमायां हुए हैं:

जानते हो/ तुम्हारी एक तख़लीक़ को/ किसी ख़्याल/ किसी मन/ न किसी घर में/ जगह मिली/ जहान-ए-फ़ानी में/ सरगरदां/ ख़ाक बसर/ फिरती रही/ जानते हो/ तुम्हारी एक तख़लीक़ की/ जेब में/ मक्कारी का कोई सिक्का नहीं/ कि वह रोटी/ या रिश्ते से/ आशना हो/ कायनात में/ तुम्हारी एक तख़लीक़/ ऐसे अकेली है/ जैसे तुम!

तन्हाई सिर्फ़ काइनात का या काइनात में ज़िंदगी गुज़ारने वालों का नहीं ख़ुद काइनात बनाने वाले का भी मसला है। और ये मसला शबनम अशाई को एक वजूदी फ़िक्र महसूस होता है और यही एहसास उनकी शायरी बन जाता है।

शबनम अशाई ने अपनी शायरी के पहले मजमूए से ताज़ा तरीन मजमूए तक अपने उसी तजस्सुस को बरक़रार रखा है। उन्होंने उमूमी सतह पर उतर कर कभी शेरी महफ़िलों या रिसालों से मसालिहत नहीं की। अपने रिदम को बरक़रार रखा। सुस्तरवी के साथ ठहर-ठहर कर अपनी बात कहना और शबनम ने अपनी तख़्लीक़ को, नए ज़माने की रविश की तरह तेज़ तर रफ़तार बनाने की कोशिश नहीं की।

आई० ए० रिचर्ड ने अपने एक मज़मून में ये सवाल उठाया था कि कोई एक नज़्म कहां मुकम्मल होती है या उसमें कितना हिस्सा फ़ालतू है। इसका तअय्युन बहुत ज़रूरी है। लेकिन ये मसला क़ारी की तफ़हीम और तख़्लीक़ कार के एहसास का है। इसलिए इसका हक़ किसे हासिल होना चाहिए।

शबनम अशाई की नज़्में इसका बड़ा मुकम्मल जवाब और जवाज़ हैं। वो नज़्म को अपने ठहरे हुए रिदम से शुरू करती हैं, फिर

تیری دنیا میں/ کوئی دکھ مٹاتا نہیں/ شبد کی چوٹ/ کون سہلائے!/ میرے من
میں/ شبد کی چوٹ لگی ہے/ چوٹ رِستی ہے/ دکھ پلتا ہے/ اپنوں سے بھی/ اپنا
لگتا ہے/ خواب بھی رِسنے سے پہلے/ پلتے ہیں/ تم نے/ بن دیکھا خواب
پال کے/ کائنات بنائی/ تمہاری کائنات کے گھاؤ کی/ کتنی مسافت میں/ دُکھ
روشن ہوجائیں گے؟/ تمہاری کائنات کے/ کس کونے میں/ دکھ سن
ہوجائیں گے؟

اِس نظم کو پڑھتے ہوئے دو مقامات پر یوں لگا کہ نظم یہاں پوری ہوگئی۔ تاہم اگلا مصرع پھر سے نظم کو اپنی بانہوں میں جکڑ لیتا ہے۔ نظم آگے بڑھتی ہے اور بالآخر نظم کی طرح احساس بھی سن ہوجاتا ہے۔ ایسا محسوس ہوتا ہے کہ شبنم عشائی کی شعری کائنات میں ایک ایسی وادی موجود ہے جو کشمیر کی طرح بظاہر پرسکون ہے تاہم اِس کے سکون میں تشویش و اضطراب کے خاموش سمندر موجزن ہیں۔ دہکتے ہوئے تندور ہیں، جن میں شیخ نورالدین بصد آرام جلوہ گر ہیں، للّہ عارفہ برہنہ ہے، لیکن عام نظریں اُس کے مشاہدے سے محروم ہیں۔

شبنم عشائی بھی للّہ عارفہ ہے۔ للّہ عارفہ کا دُکھ ابن کا لباس ہیں۔ اس لیے اس کا اضطراب اس کتھارسس کی جستجو میں ہے جس کو عرصہ ظہور تک پہنچنے میں بھی کئی مدوجزر اور باقی ہیں تب کہیں ایک پرسکون سمندر کا منظر سامنے آئے گا۔

صلاح الدین پرویز

(حالت سکر میں لکھا گیا ایک بے ترتیب، منتشر مضمون)

आहिस्ता रवी के साथ आगे बढ़ती हैं और आख़िरी मिसरा तक पहुंच कर अचानक एहसास होता है कि नज़्म मुकम्मल होगई और चौकाने वाली कैफ़ियत को पढ़ने वाले के एहसास पर छोड़ दिया। मसलन:

तेरी दुनिया में/ कोई दुख मिटाता नहीं/ शब्द की चोट/ कौन सहलाये!/ मेरे मन में/ शब्द की चोट लगी है/ चोट की चोट लगी है/ चोट रिसती है/ दुख पलता है/ अपनों से भी अपना लगता है/ ख़्वाब भी रिसने से पहले/ पलते हैं/ तुमने/ बिन देखा ख़्वाब पाल के/ कायनात बनाई/ तुम्हारी कायनात के घाव की/ कितनी मसाफ़त में/ दुख रोशन हो जायेंगे?/ तुम्हारी कायनात के/ किस कोने में/ दुख सुन्न हो जायेंगे?

इस नज़्म को पढ़ते हुए दो मुक़ामात पर यूं लगा कि नज़्म यहां पूरी हो गई। ताहम अगला मिसरा फिर से नज़्म को अपनी बांहों में जकड़ लेता है। नज़्म आगे बढ़ती है और बिलआख़िर नज़्म की तरह एहसास भी सुन्न हो जाता है। ऐसा महसूस होता है कि शबनम अशाई की शेरी काइनात में एक ऐसी वादी मौजूद है जो कशमीर की तरह बज़ाहिर पुरसुकून है ताहम इसके सुकून में तश्वीश-व-इज़्तेराब के ख़ामोश समुंदर मौजज़न हैं। दहकते हुए तंदूर हैं, जिनमें शैख़ नूरउद्दीन बसदे आराम जलवागर हैं। लल्ला-आरिफ़ा बर्हना है, लेकिन आम नज़रें उसके मुशाहदे से महरूम हैं।

शबनम अशाई भी लल्ला-आरिफ़ा है। लल्ला-आरिफ़ा का दुख उनका लिबास हैं। इसलिए उसका इज़्तेराब इस कथारसेस की जुस्तजू में है जिसको अरस-ए-ज़हूर तक पहुंचने में भी कई मद-व-जज़्र और बाक़ी हैं तब कहीं एक पुरसुकून समुंदर का मंज़र सामने आएगा।

सलाहउद्दीन परवेज़

(हालते सुक्र में लिखा गया एक
बेतरतीब, मुंतशिर मज़मून)

٭

جانے
کہاں دب گئے ہیں
انسان کی کھوج میں
میرا چہرہ
پتھر ہو گیا
جانوروں کی
بھیانک آوازوں میں
میں نے میری آواز کھو دی
پتھر چہرہ
بن آواز کا وجود
کتنا بھیانک ہوگا
تمہیں معلوم بھی ہے؟
جو ہے تو
دیکھتے کیا ہو
تم تو خدا ہو!

✿

जाने
कहाँ दब गए हैं
इंसान की खोज में
मेरा चेहरा
पत्थर हो गया
जानवरों की
भयानक आवाज़ों में
मैंने मेरी आवाज़ खो दी
पत्थर चेहरा
बिन आवाज़ का वजूद
कितना भयानक होगा
तुम्हें मालूम भी है?
जो है तो
देखते क्या हो
तुम तो ख़ुदा हो!

تم محبت سے میرا من گوندھتے
میں روشنائی سے
اپنی تنہائی نہ گوندھتی!
تنہائی گوندھتے گوندھتے
میں روٹی پکانا
بھول گئی ہوں
کیا عورت ایسی ہوتی ہے!
حیرت کے دُکھ کو
کیسے سہلاؤں!
من کے تسمے کستی ہوں
سفر میرا خواب نہیں
گھر کا دروازہ
بند پڑا ہے—

❁

तुम मुहब्बत से मेरा मन गूंधते
मैं रोशनाई से
अपनी तनहाई न गूंधती!
तनहाई गूंधते-गूंधते
मैं रोटी पकाना
भूल गई हूं
क्या औरत ऐसी होती है!
हैरत के दुख को
कैसे सहलाऊँ!
मन के तसमें कसती हूं
सफ़र मेरा ख़्वाब नहीं
घ़र कर दरवाज़ा
बंद पड़ा है–

آنسو بہادوں
کہ نظم لکھوں؟
آنسو کھنگالیں گے
من کو!
نظم بہلائے گی
دل کو!
ڈھل جاؤں
کہ بہل جاؤں؟
... نہیں تو نراشا
میرے پیروں میں
پازیب توڑ کر
پھر کوئی سفر
باندھ دے گی!

✽

आँसू बहा दूं
कि नज़्म लिखूं
आँसू खंगालेंगे
मन को!
नज़्म बहलाएगी
दिल को!
धुल जाऊँ
कि बहल जाऊँ!
..... नहीं तो निराश
मेरे पैरों में
पाज़ेब तोड़ कर
फिर कोई सफ़र
बाँध देगी!

کالا سورج
پھر طلوع ہو رہا ہے
پھر ٹھوکر کھاؤں گی
چکنا چور ہو جاؤں گی!
موت اپنی پھانسی
اگر میرے گلے میں ڈالتی
میری خیر تھی...

काला सूरज
फिर तुलू हो रहा है
फिर ठोकर खाऊँगी
चिकानाचूर हो जाऊँगी!
मौत अपनी फांसी
अगर मेरे गले में डालती
मेरी ख़ैर थी.....

❁

جانتے ہو
تمہاری ایک تخلیق کو
کسی خیال
کسی من
نہ کسی گھر میں

❋

जानते हो

तुम्हारी एक तख़लीक़ को

किसी ख़्याल

किसी मन

न किसी घर में

جگہ ملی
جہانِ فانی میں
سرگرداں
خاک بسر
پھرتی رہی
جانتے ہو
تمہاری ایک تخلیق کی
جیب میں
مکاری کا کوئی
سکہ نہیں
کہ وہ روٹی
یا رشتے سے
آشنا ہو
کائنات میں
تمہاری ایک تخلیق
ایسے اکیلی ہے
جیسے تم

जगह मिली
जहाँन-ए-फ़ानी में
सरगरदां
ख़ाक बसर
फिरती रही
जानते हो
तुम्हारी एक तख़लीक़ की
जेब में
मक्कारी का कोई सिक्का नहीं
कि वह रोटी
या रिश्ते से
आशना हो
कायनात में
तुम्हारी एक तख़लीक़
ऐसे अकेली है
जैसे तुम

خیال
تجربہ
دُکھ
خوشی
سب آواز اُتارتے ہیں
جب
اپنوں کے چہروں سے
اجنبی اُبھرتے ہیں—

✻

ख़्याल
तजुरुबा
दुःख
ख़ुशी
सब आवाज़ उतारते हैं
जब
अपनों के चेहरों से
अजनबी उभरते हैं–

❁

تیری دنیا میں
کوئی دکھ مٹاتا نہیں
شبد کی چوٹ
کون سہلائے!
میرے من میں

❁

तेरी दुनिया में
कोई दुख मिटाता नहीं
शब्द की चोट
कौन सहलाये!
मेरे मन में

شبد کی چوٹ لگی ہے
چوٹ رِستی ہے
دکھ پلتا ہے
اپنوں سے بھی
اپنا لگتا ہے
خواب بھی رِسنے سے پہلے
پلتے ہیں
تم نے
بن دیکھا خواب پال کے
کائنات بنائی
تمہاری کائنات کے گھاؤ کی
کتنی مسافت میں
دُکھ روشن ہو جائیں گے؟
تمہاری کائنات کے
کس کونے میں
دکھ سن ہو جائیں گے؟

शब्द की चोट लगी है
चोट की चोट लगी है
चोट रिसती है
दुख पलता है
अपनों से भी अपना लगता है
ख़्वाब भी रिसने से पहले
पलते हैं
तुमने
बिन देखा ख़्वाब पाल के
कायनात बनाई
तुम्हारी कायनात के घाव की
कितनी मसाफ़त में
दुख रोशन हो जायेंगे?
तुम्हारी कायनात के
किस कोने में
दुख सुन्न हो जायेंगे?

❋

تم نے من مانی کی
میں نے
موت کو
اپنی بغلوں میں چھپالیا
جب سے

तुमने मन मानी की
मैंने
मौत को
अपनी बगलों में छुपा लिया
जब से

کتھارسس—44

تمہارے محل میں نہیں
موت کی خوشبو میں
جی رہی ہوں
تم اور میں
ہم ہوتے
اور 'ہم'
ہم دونوں کا سوز و ساز!
زندگی اپنی کشش سے ہمیں
آزاد نہ کرتی
تم
اور میں
بے نشاں قبروں کے اندھیرے میں
یوں
کھو نہ جاتے!

तुम्हारे महल में नहीं
मौत की ख़ुशबू में
जी रही हूं
तुम और मैं
हम होते
और हम
हम दोनों का सोज़-ओ-साज़!
ज़िन्दगी अपनी कशिश से हमें
आज़ाद न करती
तुम
और मैं
बेनिशान कब्रों के अंधेरे में
यूं
खो न जाते!

اندھیرا اور میں
نہ کوئی راہ
نہ منزل
نہ ڈگر
نہ خواب
نہ دستک
نہ انتظار
نہ لفظ
نہ دھن
نہ کوئی ساز
نہ آواز
مگر خداوندا
تم؟

✽

अंधेरा और मैं
न कोई राह
न मंज़िल
न डगर
न ख़्वाब
न दस्तक
न इंतज़ार
न लफ़्ज़
न धुन
न कोई साज़
न आवाज़
मगर ख़ुदावंदा
तुम

✵

سیہ چوس جیسا میرا وجود
ایسے بھر گیا ہے
شاید میرا کوئی بھی ریشہ
اب کچھ بھی نہیں
جذب کرسکتا!
تقدیر کے سارے رنگ
میرے داغ ہو گئے!
ہر داغ کی آنکھ
کھلی ہے
ہر منظر میں
جالے ہی جالے ہیں
جانے مکڑیاں کہاں ہیں؟

❁

स्याह-चूस जैसा मेरा वजूद
ऐसे भर गया है
शायद मेरा कोई भी रेशा
अब कुछ भी नहीं
जज़्ब कर सकता!
तक़दीर के सारे रंग
मेरे दाग़ हो गए!
हर दाग़ की आँख
खुली है
हर मंज़र में
जाले हो जाले हैं
जाने मकड़ियां कहाँ हैं?

سب کا حزن و ملال
جیتے جیتے—
میری ''میں'' سے
طلاق ہو گئی!
اب کوئی بھی
میری مانگ میں
احمق پن کا
یا
چھچھور پن کا
سندور بھر دے
چاہے اُس کا تعلق
حیوانی
یا
شیطانی قبیلے سے ہو
میں
میری ذات سے
خلاء زدہ ہوں!

❁

सब का हुज़्न-ओ- मलाल
जीते-जीते
मेरी "मैं" से
तलाक़ हो गई
जब कोई भी
मेरी मांग में
अहमक़पन का
या
छिछोरेपन का
सिंदूर भर दे
चाहे उसका तआल्लुक़
हयवानी
या
शैतानी क़बीले से हो
मैं
मेरी ज़ात से
ख़ुलाह ज़दा हूं!

❁

آندھی
بجلی
اولے
سب تمہاری خدائی
پر میں مجھے
اِس قہر سے
کیوں بچاؤں؟
ڈھ کیوں نہ جاؤں؟
سب محو ہیں
"لباس نمائش" میں
موسم اپنا مزاج
طے نہ کرے
پہناوے کیسے چنے جائیں
ایک تمہاری خدائی
ایک تمہارے لوگ!

✿

आंधी

बिज्ली

ओले

सब तुम्हारी ख़ुदाई

पर मैं मुझे

इस क़हर से

क्यों बचाऊँ?

ढह क्यों न जाऊँ

सब महव हैं

"लिबास नुमाइश" में

मौसम अपना मिज़ाज़

तय न करे

पहनावे कैसे चुने जायें

एक तुम्हारी ख़दुाई

एक तुम्हारे लोग!

تم
مجھ میں
اُگ سکتے
کِھل سکتے
لہلہا سکتے
جذب ہوسکتے تھے
میں تخلیق کی مٹی ہوں
Casino کی ٹیبل نہیں
کہ تم مجھ پہ داؤ لگاؤ
جیتو
کہ دیوالیہ ہوجاؤ

तुम
मुझ में
उग सकते
खिल सकते
लहलहा सकते
जज़्ब हो सकते थे
मैं तख़लीक़ की मिट्टी हूं
Casino की टेबुल नहीं
कि तुम मुझ पर दाब लगाओ
जीतो
कि दावालिया हो जाओ

✲

کیا معلوم
دھوکہ تمہارے ساتھ ہوا ہے
یا میرے!
دھوکہ جینا
بہت مشکل ہے

क्या मालूम
धोखा तुम्हारे साथ हुआ है
या मेरे!
धोखा जीना
बहुत मुश्किल है

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

تمہارے لیے بھی اور
میرے لیے بھی
تارے مجھ سے بھی
اتنے ہی دور ہیں
جتنے تم سے
زندگی کا سچ
موت ہے
تمہارے لیے بھی
اور میرے لیے بھی
پھر تم
یا میں
کیوں نہ دھوکہ کو
تقدیر کہیں
اور جیون
آسان کریں

59—کتھارس

तुम्हारे लिए भी और
मेरे लिए भी
तारे मुझसे भी
उतने ही दूर हैं
जितने तुमसे
ज़िंदगी का सच
मौत है
तुम्हारे लिए भी
और मेरे लिए भी
फिर तुम
या मैं
क्यों ने धोखे को
तक़दीर कहें
और जीवन
आसान करें

میں نے تمہیں
تمہاری زندگی
تمہارا جنون
تمہاری روٹھ
کچھ بھی جینے سے روکا نہیں

❋

मैंने तुम्हें
तुम्हारा ज़िंदगी
तुम्हारी जुनून
तुम्हारा रूठ
कुछ भी जीने से रोका नहीं

تم مجھے
روٹی کھانے سے روک رہے ہو
تم
جھوٹ، دکھاوا، غصہ
کچھ بھی لے کے
جی سکتے ہو
میں صرف سانس
اور روٹی کا ٹکڑا لے کے
جی سکتی ہوں
میں تمہیں جیتا ہوا دیکھ کے بھی
جی لیتی ہوں
پر تم مجھے
مرتا ہوا ہی
دیکھ کے
کیوں جیتے ہو؟

तुम मुझे
रोटी खाने से रोक रहे हो
तुम
झूठ, दिखावा, गुस्सा
कुछ भी लेकर
जी सकते हो
मैं सिर्फ़ सांस
और रोटी का टुकड़ा ले के
जी सकती हूं
मैं तुम्हें जीता हुआ देख के भी
जी लेती हूं
पर तुम मुझे
मरता हुआ ही
देख के
क्यों जीते हो?

✵

جس پل ماں نے جنما تھا
سانس لینا
حق اپنا سمجھا تھا
میں نے!
اب سانس لیے ہوئے

❁

जिस पल माँ ने जन्मा था
साँस लेना
हक़ अपना समझा था
मैंने!
अब साँस लिये हुए

چالیس سال ہو گئے
اور تمہاری آواز سنے ہوئے
پورے چالیس دن
تمہاری آواز سننا بھی
تم سے نکاح کر کے
اپنا حق سمجھا تھا
میں نے!
سانس اور آواز
گروی کیوں ہوتے ہیں!
بنا سانس لیے ہوئے
بنا تمہیں سنے ہوئے
میں جی تو رہی ہوں
پھر بل کیوں پڑ رہے ہیں
کہیں جینے اور بہنے میں
فرق تو نہیں؟

चालीस साल हो गए
और तुम्हारी आवाज़ सुने हुए
पूरे चालीस दिन
तुम्हारी आवाज़ सुनना भी
तुम से निकाह करके
अपना हक़ समझा था
मैंने!
सांस और आवाज़
गिरवी क्यों होते हैं
बिना सांस लिए हुए
बिना तुम्हें सुने हुए
मैं जी तो रही हूं
फिर बल क्यों पड़ रहे हैं
कहीं जीने और बहने में
फ़र्क़ तो नहीं?

ہماری رات
کیوں بٹ گئی؟
تمہارے ہاتھ ایک ٹکڑا
اور میرے ہاتھ ایک!
روٹی کی تلاش میں

हमारी रात
क्यों बँट गई?
तुम्हारे हाथ एक टुकड़ा
और मेरे हाथ एक!
रोटी की तलाश में

جو ہم
مٹھی کھولیں
کہیں کھو نہ دیں
رات کے ٹکڑوں کو
تم
یا
میں
لاؤ تم بھی
صبح کی دہلیز پہ
کھڑے ہو جاؤ
اور میں بھی!
رات کے ٹکڑوں کو
جوڑ دیں
اور پھر صبح
روٹی کی تلاش میں
دونوں کھو جائیں—

जो हम
मुट्ठी खोलें
कहीं खो न दें
रात के टुकड़ों को
तुम
या
मैं
लाओ तुम भी
सुबह की दहलीज़ पर
खड़े हो जाओ
और मैं भी!
रात के टुकड़ों को
जोड़ दें
और फिर सुबह
रोटी की तलाश में
दोनों खो जायें-

✲

تمہاری ناموجودگی
میرے روم روم میں
کھنک رہی تھی
کہ تمہارا پتر ملا
جو تمہارے ذہن کی بساند میں

❁

तुम्हारी नमौजूदगी
मेरे रोंम रोंम में
खनक रही थी
कि तुम्हारा पत्र मिला
जो तुम्हारे ज़ेहन की बसांद में

لیپا ہوا تھا!
لیپا ہوا چولہا
آگ کی حرارت سے
محروم ہو جاتا ہے!
محبت کی حرارت سے محروم
میں تمہاری ناموجودگی کو
اپنی ساری روشنی دے کر
مٹنے اور بکھرنے سے بچا رہی ہوں!
تم کوئی مہک بھیجتے
جو تمہاری ناموجودگی کی کھنک میں
زندگی کا راگ بن جاتی
تمہاری پھیلائی ہوئی بساند
میرے ہی نہیں
تمہارے لیے بھی
موت کا راگ
الاپنے لگی ہے

लेपा हुआ था
लेपा हुआ चूल्हा
आग की हरारत से
महरूम हो जाता है!
मोहब्बत की हरारत से महरूम
मैं तुम्हारी नमौजूगी को
अपनी सारी रोशनी देकर
मिटने और बिखरने से बचा रही हूं!
तुम कोई महक भेजते
जो तुम्हारी नामौजूदगी की खनक में
ज़िन्दगी का राग बन जाती
तुम्हारी फैलाई हुई बिसाहिन
मेरे ही नहीं
तुम्हारे लिए भी
मौत का राग
अलापने लगी है

خوشی چھوتی نہیں
دُکھ بستا ہے!
من مسافر ہے
جانے کن زمانوں کی
طراوت کھوجنے
ہر پل سفر میں رہتا ہے
بنجر سرزمینوں میں
خنک چشموں کے
خواب بو دیتا ہے
تعبیریں پھوٹتی نہیں
دُکھ اُگ جاتا ہے
دُکھ جب اُگنے لگتا ہے
من کی ساری نمی
لے لیتا ہے
آنکھوں کی نمی اور خواب
دونوں سوکھ جاتے ہیں
اور دُکھ
بس جاتا ہے—

❁

ख़ुशी छूती नहीं
दु:ख बसता है!
मन मुसाफ़िर है
जाने किन ज़मानों की
तरावत खोजने
हर पल सफ़र में रहता है
बंजर सरज़मीनों में
खनक चश्मों के
ख़्वाब बो देता है
ताबीरें फूटती नहीं
दु:ख उग जाता है
दुख जब उगने लगता है
मन की सारी नमी
ले लेता है
आँखों की नमीं और ख़्वाब
दोनों सूख जाते हैं
और दु:ख
बस जाता है–

✻

میری وفا
کوئی نراشا نہیں
جو کسی جام میں کھو جائے
میری وفا
لہو کی داد سی
دل سے جاری ہے
وہ ہر رات چاند پہ
تمہارا چہرہ بناتی ہے
تم سے ہولے ہولے کہتی ہے

✿

मेरी वफ़ा
कोई निराशा नहीं
जो किसी जाम में खो जाए
मेरी वफ़ा
लहू की दाद सी
दिल से जारी है
वो हर रात चाँद पे
तुम्हारा चेहरा बनाती है
तुम से होले होले कहती है

سنبھل

اجل آرہی ہے ہولے ہولے
سنبھل...
تم ہو کہ زہر بونے سے
باز آتے نہیں
سمجھتی ہوں
جو تم
گوروں کے شکار نہ ہوتے
زہریلے نہ ہوتے!
پر میں کتنی ساری
زہریلی ہریالی
اپنی زمین میں دفناتی رہوں
مانا
مانا کہ عورت
سب سے اچھی قبر ہوتی ہے
قبرستان بھی
چالیس سال بعد
آباد کر دیئے جاتے ہیں
زمین
آبادی کے خواب دیکھنا
نہیں چھوڑتی—

सँभल
अजल आ रही है होले होले
सँभल...
तुम हो कि ज़ह्र बोने से
बाज़ आते नहीं
समझती हूं
जो तुम
गोरों के शिकार न होते
ज़हरीले न होते!
पर मैं कितनी सारी
ज़हरीली हरियाली
अपनी ज़मीन में दफ़नाती रहूं
माना
माना कि औरत
सबसे अच्छी क़ब्र होती है
क़ब्रस्तान भी
चालीस साल बाद
आबाद कर दिए जाते हैं
ज़मीन
आबादी के ख़्वाब देखना
नहीं छोड़ती-

تم نے خط نہیں
آندھی بھیجی تھی
جو بہا لے گئی

چھت
آنگن، دالان

तुमने ख़त नहीं
आंधी भेजी थी
जो बहा ले गई
छत
आँगन, दालान

اور شاید
میرا من بھی!
تمہاری آمد پہ
تمہیں کہاں رکھوں گی
میرے من میں
بسیرا
اب ممکن نہیں
ملبے میں
سوائے راکھ کے
کچھ بھی نہیں
کہ کوئی چھت ڈلے
جو ہم نہیں
تم یا میں
سر چھپا لیں...
چلو فرار کی وادیوں میں
گھر بسا لیتے ہیں
تم بھی
اور میں بھی!

और शायद
मेरा मन भी!
तुम्हारी आमद पे
तुम्हें कहां रखूंगी
मेरे मन में
बसेरा
अब मुमकिन नहीं
मलबे में
सिवाय राख के
कुछ भी नहीं
कि कोई छत डाले
जो हम नहीं
तुम या मैं
सर छुपा लें.....
चलो फ़रार की वादियों में
घर बसा लेते हैं
तुम भी
और मैं भी!

✵

میرے سارے درد
آج یکجا ہیں!
کوئی مجھے سہلا رہا ہے
تو کوئی
سینے سے لگا رہا ہے
کوئی ماں کی طرح
میرے سرہانے بیٹھا ہے
تو کوئی باپ جیسی
شفیق نظروں سے
مجھے پڑھ رہا ہے
کوئی دُکھ کے ٹکور دے رہا ہے

मेरे सारे दर्द
आज यकजा हैं!
कोई मुझे सहला रहा है
तो कोई
सीने से लगा रहा है
कोई माँ की तरह
मेरे सिरहाने बैठा है
तो कोई बाप जैसी
शफ़ीक़ नज़रों से
मुझे पढ़ रहा है
कोई दुख के टकोर दे रहा है

تو کوئی بوسہ!
درد ہی بس
میرے ہیں
میرے اپنے
میرے سگے
خدارا آج
میرے اپنوں کی دنیا میں
رشتوں کی
کوئی بھیانک آواز
نہ آنے دو
مجھے کچھ پل
درد کی آغوش میں
ستانے دو
یہ رشتوں کی طرح
شک یا بلیک میل
نہیں کرتے
مجھے گلے لگا کے
تھپکی دیتے ہیں
یہ درد
کتنے سگے ہیں!

तो कोई बोसा!
दर्द ही बस
मेरे हैं
मेरे अपने
मेरे सगे
खुदा-र-आज
मेरे अपनों की दुनिया में
रिश्तों की
कोई भयानक आवाज़
न आने दो
मुझे कुछ पल
दर्द की आग़ोश में
सुस्ताने दो
यह रिश्तों की तरह
शक या ब्लैक-मेल
नहीं करते
मुझे गले लगा के
थपकी देते हैं
यह दर्द
कितने सगे हैं!

✵

محبت
تمہاری دہلیز پر
180 دن اونگھتی رہی
تم مورکھ
181 ویں دن
جب گھر پہنچے
تو گھر مکان میں
بدل چکا تھا
اور محبت
درد میں!
اب درد کیا جیو گے؟
تم Technics جیتے جیتے
نہ جانے کب
انسان سے
Machine میں بدل گئے ہو
لباس تو بدل ڈالو!

❁

मुहब्बत
तुम्हारी दहलीज़ पर
180 दिन ऊंघती रही
तुम मूरख
181वें दिन
जब घर पहुँचे
तो घर मकान में
बदल चुका था
और मुहब्बत
दर्द में!
अब दर्द क्या जियोगे?
तुम technics जीते-जीते
न जाने कब
इंसान से
Machine में बदल गए हो
लिबास तो बदल डालो!

✻

تم سوائے شک
اور بلیک میل کے
کچھ کر نہیں سکتے
میں نے تمہارا اعتبار
اور محبت
دونوں کیے!
تمہارے اور میرے درمیان
جو بُعُد ہے
اُسے پھلانگنا
نہ میرے لیے ممکن ہے
نہ تم میں اس کا حوصلہ!
میں نے تمہارے اعتبار میں
نہ صرف آسمان
بلکہ
اپنی زمین بھی
گنوادی—

✽

तुम सिवाय शक
और ब्लैकमेल के
कुछ कर नहीं सकते
मैंने तुम्हारा एतबार
और मुहब्बत
दोनों किए!
तुम्हारे और मेरे दरमियों
जो बुअद हैं
उसे फलांगना
न मेरे लिए मुमकिन है
न तुम में इकसा हौसला!
मैंने तुम्हारे एतबार में
न सिफ़ आसमां
बल्कि
अपनी ज़मीन भी
गंवा दी–

✲

پھینک دیا
پھر سڑک پہ...
جو چھت نہیں
لوحِ محفوظ میں میرے
تو گھر کیوں دِکھلاتے ہو
لیکن یہ سڑک
تیس جنوری مارگ
سڑک نہیں
گھر ہے باپو کا
چھت ہے شانتی کی
دیواریں
امن و آشتی کی

(Birla House 30 Januery Marg)

✻

फेंक दिया
फिर सड़क पे.....
जो छत नहीं
लौहे महफ़ूज़ में मेरे
तो घर क्यों दिखलाते हो
लेकिन ये सड़क
तीस जनवरी मार्ग
सड़क नहीं
घर है बापू का
छत है शांति की
दीवारें
अमन-ओ-आशती की
(बिरला हाउस-30 जनवरी मार्ग)

✿

Paris سے واپسی پر
مجھے اپنے استقبال میں
گھر کی دہلیز پر نہ پاکر
جو راحت کی سانس لینے کی کوشش
تم کر رہے ہو

❁

Psris से वापसी पर
मुझे अपने इस्तेक़बाल में
घर की दहलीज़ पर न पाकर
जो राहत की सांस लेने की कोशिश
तुम कर रहे हो

عارضی ہی نہیں
تکلیف دہ بھی ہے
میری غیر موجودگی
تمہارا خواب نہیں
تمہاراFit تھا
Paris میں آیا ہوا—
Paris کی روشنیاں
کشمیر کی تاریکیوں میں کھو جانے پر
رات سونے سے پہلے
جب اپنی تنہائی سے باتیں کرو گے
تب
اپنے من کو ٹٹولنا
اور سن لینا
کہ میں
تمہارے من میں
بول رہی ہوں
یا نہیں؟

आरज़ी ही नहीं
तकलीफ़ देह भी है
मेरी ग़ैर-मौजूदगी
तुम्हारा ख़्वाब नहीं
तुम्हारा fit था
Paris में आया हुआ
Paris की रोशनियाँ
कश्मीर की तारीकियों में खो जाने पर
रात सोने से पहले
जब अपनी तन्हाई से बातें करोगे
तब
अपने मन को टटोलना
और सुन लोना
कि मैं
तुम्हारे मन में
बोल रही हूं
या नहीं?

✲

جسے عزیز رکھنا تھا
اُس کا تمسخر اُڑانے میں
جو تم لذت لیتے ہو
اپنی حیوانی صفات میں
اضافہ کر رہے ہو
یتیم ہو جاؤ گے
ہماری کھال
ابھی انسانوں جیسی ہے

✵

जिसे अज़ीज़ रखना था
उसका तमस्खुर उड़ाने में
जो तुम लज़्ज़त लेते हो
अपनी हैवानी सिफ़ात में
इज़ाफ़ा कर रहे हो
यतीम हो जाओगे
हमारी खाल
अभी इंसानों जैसी है

❁

تم میرا لباس ہو
تمہیں پہنے ہوئے
میں عریاں ہوں
یہ گماں نہ تھا
مجھے!
گماں خدا ہے
خدا لوگ ہیں
لوگ ثبوت ہیں
تمہارے 'تم' کے
میرا 'میں' اک افواہ ہے
لوگوں کی اڑائی ہوئی

❁

तुम मेरा लिबास हो
तुम्हें पहने हुए
मैं उरयां हूं
यह गुमां न था
मुझे!
गुमां ख़ुदा है
ख़ुदा लोग हैं
लोग सबूत हैं
तुम्हारे 'तुम' के
मेरा 'में' इक अफ़वाह है
लोगों की उड़ाई हुई

❋

تم میرا لباس ہو
تمہیں پہنے ہوئے
میں عریاں ہوں
یہ گماں نہ تھا
مجھے!
گماں خدا ہے
خدا لوگ ہیں
لوگ ثبوت ہیں
تمہارے 'تم' کے
میرا 'میں' اک افواہ ہے
لوگوں کی اڑائی ہوئی

❋

تم مجھے
اتنے سارے عیب
پہنا کے
ہلکے نہیں ہو جاؤ گے
میری اُترن کہلاؤ گے
چونکہ تم
میرا لباس ہو—

तुम मुझे
इतने सारे ऐब
पहना के
हलके नहीं हो जाओगे
मेरी उतरन कहलाओगे
चूंकि तुम
मेरा लिबास हो-

✻

جب کبھی بھی
تم سے
الزام تراشی
چھوٹ جائے گی
اُس پل
پچھتاؤ گے
اکیلے—

जब कभी भी

तुम से

इल्ज़ाम तराशी

छूट जायेगी

उस पर

पछताओगे

अकेले–

✿

تم نے مجھے
سمویا نہیں
مجھے تمہارا گھر نہیں
وجود چاہیے تھا
بھر جانے کے لیے

तुमने मुझे
समोया नहीं
मुझे तुम्हारा घर नहीं
वजूद चाहिए था
भर जाने के लिए

میں لمحہ لمحہ
بوند بوند
بھرتی جاتی!
تمہارا وجود
برتری سے اتنا لبریز تھا
میری خوشبو کیا
وہ میرا رقص تک
محسوس نہ کر سکتا
غصہ، نفرت
حسد یا
تعصب بھرے وجود میں
میں مر جاتی ہوں
Egolessness میں کھنکتی ہوں
میں محبت ہوں...

मैं लम्हा-लम्हा
बूंद-बूंद
भरती जाती!
तुम्हारा वजूद
बरतरी से इतना लबरेज़ था
मेरी ख़ुश्बू क्या
वो मेरा रक़्स तक
महसूस न कर सकता
गुस्सा, नफ़रत
हसद या
तास्सुब भरे वजूद में
मैं मर जाती हूं
Egolessness में खनकती हूं
मैं मुहब्बत हूं.....

✽

محبت اور چاہت کے نقشوں سے خارج
اذیت زدہ میری روح
زارزار روتی ہے...
یہ وہی روح ہے
جس کی گہرائیوں نے
تمہیں سمویا تھا
یہ وہی روح ہے
جو تمہاری جنت کی تلاش میں
اب بھی بھٹک رہی ہے
اس کے آنسو پونچھنے والے
اس کو سہلانے والے
تم نہیں تو
کون ہے؟

❁

मुहब्बत और चाहत के नक़्शों से ख़ारिज
अज़ियत-ज़दा मेरी रूह
ज़ार-ज़ार रोती है.....
यह वही रूह है
जिसकी गहराइयों ने
तुम्हें समोया था
कह वही रूह है
जो तुम्हारी जन्नत की तलाश में
अब भी भटक रही है
उसके आँसू पोंछने वाले
उसको सहलाने वाले
तुम नहीं तो
कौन है?

❁

ہانکتا ہی رہا
بس ہانکتا ہی رہا
کمینہ پن
اپنوں کا
سگوں کا
لوگوں کا
میں کتنا بھاگوں؟
کب تک بھاگوں؟
کہاں بھاگوں؟
ہر جگہ ڈستا ہے
کمینہ پن
اپنوں کا
سگوں گا
لوگوں کا!

❁

हाँकता ही रहा
बस हाँकता ही रहा
कमीना पन
अपनों का
सगों का
लोगों का
मैं कितना भागूं?
कब तक भागूं?
कहाँ भागूं?
हर जगह डसता है
कमीनापन
अपनों का
सगों का
लोगों का!

✾

شاید وہ تم ہی تھے
جس کی پسلی سے نکل کر
اِس زمین پر پاؤں رکھا تھا
میں نے
ہاں تمہاری بائیں پسلی تھی
جہاں سے نکلی تھی میں
تمہارے اکیلے پن کو
دور کرنے کے لیے!
شاید وہ تم ہی تھے
جو میری چالیس سالہ جڑوں کو
اکھاڑ کے
اپنے صحن میں پرو گئے تھے
شاید وہ تم ہی تھے

✽

शायद वह तुम ही थी
जिस की पसली से निकल कर
इस ज़मीन पर पाँव रखा था
मैंने
हां तुम्हारी बाईं पसली थी
जहाँ से निकली थी मैं
तुम्हारे अकेलेपन को
दूर करने की लिए!
शायद वह तुम ही थे
जो मेरी चालीस-साला जड़ों को
उखाड़ के
अपने सहन में पिरो गए थे
शायद वह तुम ही थे

جس کی قربت میں
جیے تھے چار دن
زندگی کے میں نے!
شاید وہ تم ہی تھے
جس کو پہن کر
میرا پیرہن مجھ پہ بجتا تھا
شاید وہ تم ہی تھے
جس نے مجھے بے لباس کر کے
کچہری میں کھڑا کیا تھا
شاید وہ تم ہی تھے
جس نے میرے سر سے
چھت چھین کر
مجھے
چوراہے پر کھڑا کیا
شاید وہ تم ہی تھے
جس کی میں
شہہ رگ تھی
اور وہ
تم ہی ہو
جس کی خاطر
میں تمہاری گردن سے کٹ گئی!

जिस की कुरबत में
जिये थे चार दिन
ज़िंदगी के मैंने!
शायद वो तुम थे
जिसको पहपनकर
मेरा पैरहन मुझपर सजता था
शायद वह तुम ही थे
जिसने मुझे बेलिबास करके
कचहरी में खड़ा किया था
शायद वह तुम ही थे
जिसने मेरे सर से
छत छीन कर
मुझे
चौराहे पर खड़ा किया
शायद वह तुम ही थे
जिसकी मैं
शहरग थी
और वह
तुम ही हो
जिस की ख़ातिर
मैं तुम्हारी गर्दन से कट गई!

آنسو نہ تھمیں
کہ قلم تھاموں
تمہارے حصہ کی ساری محبت
میرے آنسوؤں میں بہہ گئی!
تہمتیں بنتے بنتے

❋

आँसू न थमें
कि क़लम थामें
तुम्हारे हिस्से की सारी मुहब्बत
मेरे आँसूओं में बह गई!
तोहमतें बुनते-बुनते

تم محبت کی چادر
بُننا یا اوڑھنا
دونوں بھول گئے ہو
خدا بھی
میرے نصیب بنتے سمے،
میرا کوئی اپنا ہو
یا
کوئی مجھے اپنا مانے
دونوں باتیں
بھول گیا تھا!
تم
محبتیں بھول کے
رنجشیں پالتے ہو
میں
بِنا محبت بُنے
یا اوڑھے
تابوت میں لیٹ جاتی ہوں
خدارا
موت کی تہمت نہ لگاؤ
موت ہی سچ ہے
بس ایک ہی سچ ہے

तुम मुहब्बत की चादर
बनाना या ओढ़ना
दोनों भूल गए हो
खुदा भी
मेरे नसीब बनते समय
मेरा कोई अपना हो
या
कोई मुझे अपना माने
दोनों बातों
भूल गया था
तुम
मुहब्बतें भूल के
रंजिशें पालते हो
मैं
बिना मोहब्बत बुने
या ओढ़े
ताबूत में लेट जाती हूं
ख़ुदा रा
मौत की तोहमत न लगाओ
मौत ही सच है
बस एक ही सच है

❁

کیوں مجھے معذور کر دیا
محبت کو تم نے
بُننے نہ دیا!
اوڑھنے نہ دیا!
محبت بُنتی

✵

क्यों मुझे माजूर कर दिया
मुहब्बत को तुमने
बुनने न दिया
ओढ़ने न दिया
मुहब्बत बुनती

تو من کی اُنگلیاں
بے کار نہ ہوتیں
محبت اوڑھتی
تو نفرتوں کی زد پہ
یوں نہ ٹھٹھرتی
اپاہج من کو
کس چوکھٹ رکھوں؟
اپاہج تن کو
تم تو
بیساکھیاں
دلوا دیتے ہو
سماج میں
عزت پاتے ہو
اپاہج من کو
تم موت کیوں نہیں دلواتے
مرنا آسان ہے اور
معذوری جینا
بہت دُشوار—

तो मन की ऊँगलियाँ
बेकार न होतीं
मुहब्बत ओढ़ती
तो नफ़रतों की ज़द पे
यूं न ठिठरती
अपाहिज मन को
किस चौखट रखूं?
अपाहिज तन को
तुम तो
बैसाखियां
दिलवा देते हो
समाज में
इज्ज़त पाते हो
अपाहिज मन को
तुम मौत क्यों नहीं दिलवाते
मरना आसान है और
माजूरी जीना
बहुत दूश्वार

✺

محبت بوتے
جھگڑے کیوں اُگاتے ہو
نفرتوں کا جنگل
دیکھتے ہی دیکھتے
پھیل جائے گا
ساری زمین
بھر جائے گی
میں
محبت کہاں بو دوں؟
خوشی کی کاشت
کہاں ہوگی؟
اور پھر صرف
سانپوں کا بسیرا ہوگا
تم جھگڑے کیوں اُگاتے ہو؟
میں محبت بوتی!
میں کہاں جاؤں؟

❋

मुहब्बत बोते
झगड़े क्यों उगाते हो
नफ़रतों का जंगल
देखते ही देखते
फ़ैल जायेगा
सारी ज़मीन
भर जायेगी
मैं
मुहब्बत कहाँ बो दूं?
ख़ुशी की काश्त
कहाँ होगी?
और फिर
सांपों का बसेरा होगा
तुम झगड़े क्यों उगाते हो?
मैं मुहब्बत बोती!
मैं कहाँ जाऊं?

محبت کوئی فیصلہ نہیں
ایک راستہ ہے
جس پہ قدم رکھتے ہی
تم خود کو
غیر محفوظ سمجھنے لگے!
فیصلہ طلاق ہے
جسے تم اپنی ہتھیلی میں لیے
خود کو محفوظ سمجھتے ہو
طلاق حق ہے زندگی نہیں
زندگی حق نہیں سہولیت ہے!

✽

मुहब्बत कोई फ़ैसला नहीं
एक रास्ता है
जिस पे क़दम रखते ही
तुम ख़ुद को
ग़ैर महफ़ूज़ समझने लगो!
फ़ैसला तलाक़ है
जिसे तुम अपनी हथेली में लिए
ख़ुद को महफ़ूज़ समझते हो
तलाक़ हक़ है ज़िंदगी नहीं
ज़िंदगी हक़ नहीं सहूलियत है!

✲

چھت تو نہیں دی مجھے
میری قبر پر
ایک مٹھی مٹی
ضرور ڈالنا
میں ڈھک جاؤں گی!
تم
میرا لباس ہوتے ہوئے بھی
مجھے
عریاں کر گئے

छत तो नहीं दी मुझे
मेरी क़ब्र पर
एक मुट्ठी मिट्टी
ज़रूर डालना
मैं ढँक जाऊँगी!
तुम
मेरा लिबास होते हुए भी
मुझे
उरयां कर गए

میں للّہ عارفہ نہیں
تمہارے اکیلے پن کو
دور کرنے کی خاطر
تمہاری بائیں پسلی سے نکلی تھی
تمہاری
شریک حیات ہوں میں
جو جنت میں
تمہارے
ہم دوش رہا کرتی تھی
اِس کی تصدیق
تمہارے Tanent نے نہیں
قرآنِ کریم نے کی ہے
تم اپنی پسلی کا گھاؤ لیے
خاک بہ سر
پھرتے رہو
میں للّہ عارفہ نہیں
کہ تندور مجھے پناہ دے
میری قبر پر
ایک مٹھی مٹی
ضرور ڈالنا
میں ڈھک جاؤں گی...

मैं लल्ला-आरिफ़ा नहीं
तुम्हारे अकेलेपन को
दूर करने की ख़ातिर
तुम्हारी बाईं पसली से निकली थी
तुम्हारी
शरीके हयात हूं मैं
जो जन्नत में
तुम्हारे
हमदोश रहा करती थी
इसकी तस्दीक़
तुम्हारे tanent ने नहीं
कुराने करीम ने की है
तुम अपनी पसली का घाव लिए
ख़ाक-ब-सर
फ़िरते रहो
मैं लल्ला-आरिफ़ा नहीं
कि तंदूर मुझे पनाह दे
मेरी कब़र पर
एक मुट्ठी मिट्टी
ज़रूर डालना
मैं ढँक जाऊँगी.....

❁

جہنمی بھکارن
چلی جارہی ہے
جنتی والد
میاں شہزادے
جنت کی ہوا
اور
محل کی روشنیوں میں
اس کو جھانک نہیں سکتے

❋

जहन्नमी भिखारन
चली जा रही है
जन्नती वालिद
मियां शहज़ादे
जन्नत की हवा
और
महल की रोशनियों में
उसके झांक नहीं सकते

دونوں
تمازت کے سفر پر
اس کو بھیجتے رہتے ہیں
جلتے صحراؤں میں
تار تار من لیے
جہنمی بھکارن
چلی جارہی ہے
توہین آرزو اور
توہینِ عزت
آنسوؤں سے دھوتی ہے
جہنمی بھکارن
چلی جارہی ہے
حسرتوں کی بے کرانی میں
راتوں کو چیختی ہے
کائنات سے بے دخل
ہوجاتی ہے
جنتی والد
میاں شہزادے
جنت کی ہوا اور
محل کی روشنیوں میں
محفوظ ہوجاتے ہیں!

दोनों
तमाज़त के सफ़र पर
उसको भेजते रहते हैं
जलते सहराओं में
तार-तार मन लिए
जहन्नमी भिखारन
चली जा रही है
तौहीन-ए-आरज़ू और
तौहीन-ए-इज़्ज़त
आंसूओं से धोती है
जहन्नमी भिखारन
चली जा रही है
हसरतों की बेकरानी में
रातों में चीख़ती है
कायनाय से बेदख़ल
हो जाती है
जन्नती वालिद
मियां शाहज़ादे
जन्नत की हवा और
महल की रोशनियों में
महफ़ूज़ हो जाते हैं!

✲

تم نہیں
تمہارا قلم
مجھ پہ نہیں
کاغذ پر برسا تھا
چلو یوں ہی سہی
پر تمہارے شکوے؟
تمہاری ضد؟
شکوے دلوں کو

✼

तुम नहीं
तुम्हारा क़लम
मुझ पर नहीं
काग़ज़ पर बरसा था
चलो यूं ही सही
पर तुम्हारे शिकवे?
तुम्हारी ज़िद?
शिकवे दिलों को

دور کرتے ہیں
ضد سے ساتھی
چھوٹ جاتے ہیں!
اپنے اندر دیکھو
میں جہاں تھی
اب وہاں نہیں ہوں...
اپنے من کی
گونجتی آوازوں میں
مجھے کھوجو
اب وہاں
میں بولتی نہیں
سو میرے نہیں
بدن کے ساتھی
چلو یوں ہی سہی
دو بدن
ایک قبر
کھود سکتے ہیں
تمہارا ذہن
اور میرا من
ایک ساتھ
دفن ہو سکتے ہیں!

दूर करते हैं
ज़िद से साथी
छूट जाते हैं!
अपने अंदर देखो
मैं जहाँ थी
अब वहां नहीं हूं.....
अपने मन की
गूंजती आवाज़ों में
मुझे खोजो
अब वहां
मैं बोलती नहीं
सो मेरे नहीं
बदन के साथी
चलो यूं ही सही
दो बदन
एक क़ब्र
खोद सकते हैं
तुम्हारा ज़ेहन
और मेरा मन
एक साथ
दफ़न हो सकते हैं!

❁

جنت کی سجاوٹ میں مشغول
تم بھول گئے
کہ میری لاش
قبرستان تک
کون لے جائے گا؟
کفن جیسے سفید
میرے بالوں پہ
تہمتوں کا خضاب لگانے والے

جन्नत की सजावट में मशगूल
तुम भूल गए
कि मेरी लाश
कब्रिस्तान तक
कौन ले जायेगा?
कफ़न जैसे सफ़ेद
मेरे बालों पे
तोहमतों का ख़िज़ाब लगाने वाले

جیتے ہوں تو جئیں
تنہائی کے زہر سے
میں
مرگئی ہوں!
مجھ سے پہلے
میرے خواب
میرے صبر سے مر گئے تھے
اور میری ہی مٹی میں
دفن ہو گئے تھے!
مجھے اپنے بے حق وجود کی قسم
اگر میں نے کبھی
زندگی میں جھانکا ہو
رشتوں کی دکھن سہنے والوں کا سفر
آنسوؤں سے قبر تک ہی
محدود ہوتا ہے
کسی رستے پہ
جو کبھی میں تھم بھی گئی
تو ستاروں کی گردش سے غش کھا کے
مجھے اپنے بے حق وجود کی قسم
اگر میں نے کبھی
کہیں چھاؤں دیکھی ہو—

जीते हों तो जिये
तन्हाई के ज़हर से
मैं
मर गई हूं!
मुझ से पहले
मेरे ख़्वाब
मेरे सब्र से मर गऐ थे!
और मेरी ही मिट्टी में
दफ़न हो गऐ थे!
मुझे अपने बेहक़ वजूद की क़सम
अगर मैंने कभी
ज़िन्दगी में झांका हो
रिश्तों की दुखन सहने वालों का सफ़र
आँसुओं से क़ब्र तक ही
महदूद होता है
किसी रस्ते पे
जो कभी मैं थम भी गई
तो सितारों की गर्दिश से ग़श खा के
मुझ अपने बेहक़ वजूद की क़सम
अगर मैंने कभी
कहीं छांव देखी हो–

❁

رشتے مجھ پہ مٹی ڈالتے ہیں
میں بے نشان قبر میں دب جاتی ہوں
تنہائی مجھے گنگاتی ہے
میں کوئی راگ بن جاتی ہوں
قبر کی خاموشی

❋

रिश्ते मुझ पे मिट्टी डालते हैं
मैं बेनिशान क़ब्र में दब जाती हूं
तन्हाई मुझे गुनगुनाती है
मैं कोई राग बन जाती हूं
क़ब्र की ख़ामोशी

اور راگ کے ساز میں
میری آواز کھو گئی ہے
شام جیسے دو غلے رنگ
میں سہہ نہیں سکتی
شام رنگ پہننے والے
سورج کی آخری سانس تک
پی لیتے ہیں
میں نے تو اس کے پستان نہ چوسے
جس نے مجھے جنما تھا
جنم داتا
جب اپنی تخلیق کی ہتھیلیوں پہ لگی
مہندی مٹا کر
ہاتھ میں حکم تھما دیتے ہیں
جذبات کی رائیگانی میں
سگے دفن ہو جاتے ہیں
ہم خالی شام
خالی گھر
خالی خالی زندگی
مرتے مرتے، جی لیتے ہیں

और राग के साज़ में
मेरी आवाज़ खो गई है
शाम जैसे दोग़ले रंग
मैं सह नहीं सकती
शाम रंग पहनने वाले
सूरज की आख़िरी सांस तक
पी लेते हैं
मैंने तो उसके पिस्तान न चूसे
जिसने मुझे जन्मा था
जन्मदाता
जब अपनी तख़लीक़ की हथेलियों पे लगी
मेंहदी मिटा कर
हाथ में हुकुम थमा देते हैं
ज़ज़्बात की रायगानी में
सगे दफ़न हो जाते हैं
हम ख़ाली शाम
ख़ाली घर
ख़ाली-ख़ाली ज़िन्दगी
मरते-मरते, जी लेते हैं

٭

رشتے سایہ کیوں نہیں ہوتے
یہ، حادثے کیوں ہوتے ہیں
سینوں میں دل کیوں نہیں دھڑکتے
یہ ذہن بن کے کیوں بولتے ہیں
ہم محبتیں، اپنائیتیں، قربتیں کیوں نہیں جیتے
صرف حالات یا قیاسات کیوں جیتے ہیں
ہم اپنے اندر لہراتے یا سمٹ کیوں نہیں جاتے
اشتعال بن کے دوسروں پہ جھپٹتے کیوں ہیں
'اپنے' آنکھ سے آنکھ، من سے من کیوں نہیں ملاتے
اپنوں کو نشانہ کی طرح گھورتے کیوں ہیں

✿

रिश्ते साया क्यों नहीं होते
ये, हादिसे क्यों होते हैं
सीनों में दिन क्यों नहीं धड़कते
यह ज़हन बनके क्यों बोलते हैं
हम मुहब्बतें, अपनाइयतें, कुरबतें क्यों नहीं जाते
सिर्फ़ हालात या क़यासात क्यों जीते हैं
हम अपने अंदर लहराते या
सिमट क्यों नहीं जाते
इश्तिआल बनकर दूसरों पर झपटते क्यों हैं
"अपनों" आँख से आँख
मन से मन क्यों नहीं मिलाते
अपनों को निशाने की तरह घूरते क्यों हैं

✿

تجھے تو میری
بے حق عورت کے دُکھ
معلوم تھے جاناں
یہ کس لہجے میں
تو نے مجھے
رخصت کیا؟
مجھ میں جیوت
مصیبت حال لڑکی
تمہارا کچھ نہیں بگاڑتی
یوں ہی اکھاڑا
تم نے
اس کو!

❋

तुझे तो मेरी
बेहक़ औरत के दुख
मालूम थे जानां
यह किस लहजे में
तूने मुझे रूख़सत किया?
मुझ में जीवित
मुसीबत-हाल लड़की
तुम्हारी कुछ नहीं बिगाड़ती
यूं ही उखाड़ा
तुमने
उसको!

٭

محبت نہ سہی
زندگی بھی نہیں
لاؤ وفا کرتے ہیں
روٹھو نہیں
چھوٹو نہیں
روٹھو تو سب مٹی
چھوٹو تو
سنسار چھوٹے!

मुहब्बत न सही
ज़िंदगी भी नहीं
लाओ वफ़ा करते हैं
रूठो नहीं
छूटो नहीं
रूठो तो सब मिट्टी
छूटो तो
संसार छूटे!

کتنے جنم

الاؤ تاپوں

کتنے سفر

غم کی لاٹھی پہ کاٹوں

بس سکتی تھی میں بھی

कितने जन्म
अलाव तापूं
कितने सफ़र
ग़म की लाठी पे काटूं
बस सकती थी मैं भी

کسی من میں
مجھ سے
سڑکوں پہ
دھول کیوں اڑوائی؟
تیر سکتی تھی
نیلے پانیوں میں
میں بھی
کاہے کو سوچھا
کہ مجھے ڈوبنا ہی ہے
دیکھو
تم نے سب کے سر پر
چھت رکھی ہے
میں ہی اکیلے
بھیگ رہی ہوں!

किसी मन में
मुझ से
सड़कों पे
धूल क्यों उड़वाई?
तैर सकती थी
नीले पानियों में
मैं भी
काहे को सूझा
कि मुझे डूबना ही है
देखो
तुमने सब के सर पर
छत रखी है
मैं ही अकेले
भीग रही हूं!

✽

جو سامنے ہے
یہ تمنا نہیں
ہاتھوں کی پھینکی ہوئی
باسی لکیریں ہیں
اور یہ جو لمبی رات ہے
اِس میں مجھے سونا نہیں
بجھتے ہوئے رشتوں کو
تاپنا ہے
تم اپنی خوشی کے سنگ
جھوم لو
مجھے اپنے غم کا راگ
الاپنے دو

❁

जो सामने है
यह तमन्ना नहीं
हाथों की फेंकी हुई
बासी लकीरें हैं
और यह जो लम्बी रात है
इसमें मुझे सोना नहीं
बुझते हुए रिश्तों को
तापना है
तुम अपनी ख़ुशी के संग
झूम लो
मुझे अपने ग़म का राग
अलापने दो

✿

میری خوشیاں لوٹا دو
جو تمہاری انا میں دفن ہیں
میری نیندیں لوٹا دو
جو تمہاری بے تہہ و جہی میں
اونگھ رہی ہیں
میرے خواب؟
میرے خواب خوشی نیند
چھیننے والے
اِس سے پہلے
کہ تمہارا دن
میری طرح
رات کی مانند
تاریک ہو جائے
آنکھیں کھولو
مجھے پہچانو
کہیں میری وحشت کا طوفان
تمہیں
ڈھا نہ جائے

✽

मेरी ख़ुशियों लौटा दो
जो तुम्हारी अना में दफ़न हैं
मेरी नींदें लौटा दो
जो तुम्हारी बेतवज्जुही में
ऊंघ रही हैं
मेरे ख़्वाब?
मेरे ख़्वाब खुशी नींद
छीनने वाले
इससे पहले
कि तुम्हारा दिन
मेरी तरह
रात की मानिंद
तारीक हो जाये
आँखें खोलो
मुझे पहचानो
कहीं मेरी वहशत का तूफ़ान
तुम्हें
ढहा न जाये

✿

وہ محبت
جس نے میرے من کو
تیرے من سے جوڑ دیا تھا
اُس وہم سے
جس نے تمہیں
اپنی زمین سے
اور مجھے
میری چھت سے
بے دخل کر دیا ہے
بہت مضبوط
بہت پاک ہے...
سنو
لوگ جاہل ہیں
ہماری جدائی کو
میری بدکرداری
یا
تمہاری عیاشی
کہہ سکتے ہیں!

वह मुहब्बत
जिसने मेरे मन को
तेरे मन से जोड़ दिया था
उस वहम से
जिसने तुम्हें
अपनी ज़मीन से
और मुझे
मेरी छत से
देबख़ल कर दिया है
बहुत मज़बूत
बहुत पाक है.....
सुनो
लोग जाहिल हैं
हमारी जुदाई को
मेरी बदकिरदारी
या
तुम्हारी अय्याशी
कह सकते हैं!

❁

رشتوں کی اذیتیں
پھر امڈ آئی ہیں
من کراہ رہا ہے
روح میں
لفظوں کی میخیں
پھر چبھ رہی ہیں!
تمہارے تھنوں میں
دودھ اترا تھا
میں گواہ ہوں
مجھے ماں چاہیے
صلاح مجھے جنم دو

रिश्तों की अज़ीयतें
फिर उमड़ आई हैं
मन कराह रहा है
रूह में
लफ़्ज़ों की मेखें
फिर चुभ रही हैं!
तुम्हारी थनों में
दूध उतरा था
मैं गवाह हूं
मुझे माँ चाहिए
सलाह मुझे जन्म दो

✵

ایک نہیں
بیسوں بار
تمہاری دہلیز پہ
سجدے کیئے
تم غفلت کی چادر اوڑھے
اجنبیت کی دھن میں
اپنائیت کا ساز ہی
بھول گئے ہو

एक नहीं
बीसों बार
तुम्हारी दहलीज़े पे
सजदे किए
तुम ग़फ़लत की चादर ओढ़े
अजनबियत की धुन में
अपनाइयत का साज़ ही
भूल गऐ हो

✿

تمہیں
شریکِ حیات ہی نہیں
لکھنے والا
نصیب ہوا تھا
وہ نہ صرف تمہاری افادیت
منوالیتی
بلکہ تم
باوقار ہوجاتے
تمہارے وجود کے
زخموں سے بہتی پیپ
اس کی تخلیق کے
سیہ چوس میں
جذب ہوجاتی
تم
سڑاند نہیں پھیلاتے
صنف بن جاتے...

✵

तुम्हें
शरीक-ए- हयात ही नहीं
लिखने वाला
नसीब हुआ था
वह न सिर्फ़ तुम्हारी इफ़ादियत
मनवा लेती
बल्कि तुम
बानिकार हो जाते
तुम्हारे वजूद के
ज़ख़्मों से बहती पीप
उसकी तख़लीक़ के
सियाह- चूस में
जज़्ब हो जाती
तुम
सड़ांध नहीं फैलाते
सिन्फ़ बन जाते.....

پیڑ تو اس نے
وہاں بھی اگائے تھے
جہاں وہ جنمی تھی
اور پھر وہاں بھی
اس نے پھول اگائے تھے

पेड़ तो उसने
वहाँ भी उगाये थे
जहाँ वह जन्मी थी
और फिर वहाँ भी
उसने फूल उगाये थे

جہاں اس کا کھونٹہ تھا...
...الپائن جھینگر نے
سارے پھول مسل دیئے
وہ پیڑوں کی اور جھانکی
چھاؤں گھنی تھی
پر اب اس سایہ میں
صرف اس کے
عیبی ہونے کی
گونج تھی
وہ زخمی تھی
باغی ہوگئی
باغیوں کی سزا
دوسرے قیدیوں سے
زیادہ ہوتی ہے

(الپائن جھینگر مادہ کو خوش نہیں کرتا بلکہ زخمی کرتا ہے)

जहाँ उसका खूंटा था
अलपाइन झींगर ने
सारे फूल मसल दिए
वह पेड़ों की ओर झाँकी
छाँव घनी थी
पर अब इस साये में
सिर्फ़ उसके
ऐबी होने की
गूंज थी
वह जख़्मी थी
बाग़ी हो गई
बाग़ियों की सज़ा
दूसरे क़ैदियों से
ज़्यादा होती है

(अलपाइन झींगर मादा को खुश नहीं करता बल्कि ज़ख़्मी करता है)

تعبیریں اتنی بھیانک ہیں
خواب سہانے کیوں تھے؟
سہانے خواب
سہانے دنوں کی طرح
رات کی سیاہی میں

❁

ताबीरें इतनी भयानक हैं
ख़्वाब सुहाने क्यों थे?
सुहाने ख़्वाब
सुहाने दिनों की तरह
रात की सियाही में

کھو کیوں نہیں جاتے؟

رات اپنی سیاہی میں
رازوں کو چھپا لیتی ہے
دلوں کے زخم
اپنی سیاہی سے کیوں نہیں بھرتی؟
زبانوں کے زخم
دلوں کی توڑ پھوڑ کرنے سے
باز نہیں آتے
کسی لہجے میں اتنا ظرف نہیں
کہ ٹوٹے ہوئے دلوں کو جوڑیں
ٹوٹے ہوئے دل بھیانک تعبیروں کو
دانتوں سے جی لیتے ہیں
پر ہر دھڑکن پوچھتی ہے
کہ خواب سہانے کیوں تھے؟

खो क्यों नहीं जाते?
रात अपनी सियाही में
राज़ों को छुपा लेती है
दिनों के ज़ख़्म
अपनी सियाही से क्यों नहीं भरती?
ज़बानों के ज़ख़्म
दिलों की तोड़-फ़ोड़ करने से
बाज़ नहीं आते
किसी लहजे में इतना ज़र्फ़ नहीं
कि टूटे हुए दिलों को जोड़े
टूटे हुए दिल भयानक ताबीरों को
दाँतों से जी लेते हैं
पर हर धड़कन पूछती है
कि ख़्वाब सुहाने क्यों थे?

کہاں ہے میری چھت
کہاں ہے میرا آنگن
میری سنتان کہاں ہے؟
تم مجھ پر اپنی خفت کے نوکیلے دانت
گاڑ سکتے ہو

❁

कहाँ है मेरी छत
कहां मै मेरा आँगन
मेरी संतान कहाँ है?
तम मुझ पर अपनी ख़िफ़्त के नुकीले दाँत
गाड़ सकते हो

لیکن میری حِس کراہ رہی ہے...
تم خفت جینا کب چھوڑو گے؟
میں اپنی حس کو
موت کی لوری نہیں دے سکتی
موت اپنے پروں کا سایہ
صرف میرے جسم پہ کیے ہوئی ہے
میری حس
ننگی ہے اور جیوت ہے
کیا تمہاری نظریں
نہیں جھکیں گی؟
جن آنکھوں میں
میں نے اپنی محبتیں
ضائع ہوتے ہوئے دیکھی ہوں
ان میں
کچھ بھی نہیں اب
کچھ بھی نہیں
میں دیکھ سکتی!

लेकिन मेरी हिस कराह रही है.....
तम ख़िफ़्त जीना कब छोड़ोगे?
मैं अपनी हिस को
मौत की लोरी नहीं दे सकती
मौत अपने परों का साया
सिर्फ़ मेरे जिस्म पे किये हुए हैं
मेरी हिस
नंगी है और जीवित है
क्या तुम्हारी नज़रें
नहीं झुकेंगी?
जिन आंखों में
मैंने अपनी मुहब्बतें
उनमें
कुछ भी नहीं अब
कुछ भी नहीं
मैं देख सकती!

❁

اپن مر کیوں نہیں گئے
اُس عشق کی موت کے ساتھ
جس میں
تم نے اپنے ناخن
اور میں نے
اپنی بصارت کھودی تھی
ڈھیر سارے جوکھم
بہت سی اذیتیں
کتنوں کی روٹھ
صرف الگ ہونے کے لیے؟
اکیلے
بنا ناخنوں کے
اب کون سے آسمان کے بادل
جمع کرو گے؟
بنا بصارت کے
ساکت ڈھانچے سے زیادہ
کون سی عبرت ناک چیز
دنیا میں ہوگی؟

❁

अपन मर क्यों नहीं गए
उस इश्क़ की मौत के साथ
जिसमें
तुमने अपने नाखुन
और मैंने
अपनी बसारत खो दी थी
ढेर सारे जाखिम
बहुत सी अज़ीयतें
कितनों की रूठ
सिर्फ़ अलग होने के लिए?
अकेले
बिना नाख़ुनों के
अब कौन से आसमों के बादल
जमा करोगे?
बिना बसारत के
साकित ढांचे से ज़्यादा
कौन सी इबरतनाक चीज़
दुनिया में होगी?

❁

کوئی ہے
جو سمجھ کی روئی کو
اپنائیت کی سیک پہ تپا کے
میرے لہولہان من کو
ٹکور دے

कोई है
जो समझ की रूई को
अपनाइयत की सेक पे तपा के
मेरे लहुलुहान मन को
टकोर दे

کوئی ہے
جو سمجھ کی روئی کو
اپنائیت کی سیک پہ تپا کے
میرے لہولہان من کو
ٹکور دے

कोई है
जो समझ की रूई को
अपनाइयत की सेक पे तपा के
मेरे लहुलुहान मन को
टकोर दे

دُکھ رہے ہیں
سارے انگ من کے
پھول رہی ہیں
ساری نسیں
من کی
کوئی ہے؟
کیسی انوکھی بستی ہے
جسم ہی جسم ہیں
روحیں سفر پر نکلی ہوئی ہیں
گہرے دکھوں میں...
یا پھر خوابوں کی تلاش میں...
کہ فرار میں...
بدن اجنبیوں کی طرح
دیکھ رہے ہیں
درد میں کراہ رہے
من کو!

दुख रहे हैं
सारे अंग मन के
फूल रही हैं
सारी नसें
मन की
कोई है?
कैसी अनोखी बस्ती है
जिस्म ही जिस्म हैं
रूहें सफ़र पर निकली हुई हैं
गहरे दुखों में.....
या फिर ख़्वाबों की तलाश में....
कि फ़रार में
बदन अजनबियों की तरह
देख रहे हैं
दर्द में कराह रहे
मन को!

یہاں
کوئی کسی کا
کچھ نہیں لگتا
یہ جو رشتے بھوگ رہی ہو
اپنے ہاتھ پیر کٹوا رہی ہو

✿

यहाँ
कोई किसी का
कुछ नहीं लगता
यह जो रिश्ते भोग रही हो
अपने हाथ पैर कटवा रही हो

آنکھیں تو وہ تمہاری
بہت پہلے پھوڑ چکے ہیں
نہیں تو خواب
تمہیں تمہاری ڈگر
لے جاتے
اُن کے خواب سینچتے سینچتے
تمہاری کوب دکھ جائے گی
اور تمہیں پھینک دیا جائے گا
سڑک پر
گلی کے کتوں کا
خوف نہیں تمہیں؟
بوٹی بوٹی نوچ لیں گے
سب تماشا دیکھیں گے
یہاں
کوئی کسی کا
کچھ نہیں لگتا

आँखें तो वह तुम्हारी
बहुत पहले फोड़ चुके हैं
नहीं तो ख़्वाब
तुम्हें तुम्हारी डगर
ले जाते
उन के ख़्वाब सींचते-सींचते
तुम्हारी कोब दुख जायेगी
और तुम्हें फ़ेंक दिया जायेगा
सड़क पर
गली के कुत्तों का
ख़ौफ़ नहीं तुम्हें?
बोटी- बोटी नोच लेंगे
सब तमाशा देखेंगे
यहां
कोई किसी का
कुछ नहीं लगता

میری ہر سعی کو دھول میں اڑانا
تمہارا زندگی بھر کا مشغلہ رہا
میری روح اب
زندگی کی کشمکش میں تھک کے
جینے کی رغبت
کھو بیٹھی ہے
تم اب کیا کرو گے؟
میں نے کوشش کرنا چھوڑ دیا
اور بیگانگی کو جینا شروع کیا
میری بیگانگی کی بھی
اب دھول نہ اڑاؤ
از سر نو کوئی اور مشغلہ ڈھونڈ لو
اپنے آپ کو زندہ رکھنے کے فن میں
پورا پورا اترو

मेरी हर सई को धूल में उड़ाना
तुम्हारा ज़िंदगी-भर का मशग़ला रहा
मेरी रूह अब
ज़िंदगी की कशमकश में थक के
जीने की रग़बत
खो बैठी है
तुम अब क्या करोगे?
मैंने कोशिश करना छोड़ दिया
और बेगानगी को जीना शुरू किया
मेरी बेगानगी की भी
अब धूल न उड़ाओ
अज़-सरे-नौ कोई और मशग़ला ढूंढ लो
अपने आपको ज़िन्दा रखने के फ़न में
पूरा-पूरा उतरो

✿

حادثوں میں زندہ رہنے کے لیے
ہم کب تک زندہ رہیں؟
خوف کا انوکھا سایہ
ہماری روح کو گھیر لیتا ہے
ہمارے جسم
ہماری روح کو
سہلا نہیں سکتے
بس تماشا دیکھتے ہیں
اُن اپنوں کی طرح
جن کے کان
ہمارے کسی بھی دکھ کی دکھن
نہیں سنتے
بس آنکھیں ان کی
نہ دکھائی دینے والے
خوابوں کے لیے
ہمارے جسموں میں
سفر کرتی ہیں

✽

हादसों में ज़िन्दा रहने के लिए
हम कब तक ज़िन्दा रहें?
ख़ौफ़ का अनोखा साया
हमारी रूह को घेर लेता है
हमारे जिस्म
हमारे रूह को
सहला नहीं सकते
बस तमाशा देखते हैं
उन अपनों की तरह
जिन के कान
हमारे किसी भी दुख की दुखन
नहीं सुनते
बस आँखें उनकी
न दिखाई देने वाले
ख़्वाबों के लिए
हमारे जिस्मों में
सफ़र करती हैं

جو ہوتا ہے
وہ ہو نہیں جاتا
کیا جاتا ہے
ہونے کی زد میں آئے ہوؤں کو
پتہ نہیں چلتا
جب تک ان کی ہمت
کفن اوڑھتی ہے اور ان کا من
قبرستان بن جاتا ہے
ایسے میں
کوئی تو ایسا ہونا چاہیے
جو قبرستان کو آباد کرنے کا فتویٰ دے
ورنہ تاک میں بیٹھے جانور ہمیں
اپنی غذا کا نوالہ
بنا سکتے ہیں—

✻

जो होता है
वह हो नहीं जाता
क्या जाता है
होने की ज़द में आये हुओं को
पता नहीं चलता
कब तक उन की हिम्मत
कफ़न ओढ़ती है और उन का मन
कब्रिस्तान बन जाता है
ऐसे में
कोई तो ऐसा होना चाहिए
जो कब्रिस्तान को आबाद करने का फ़तवा दे
वरना ताक में बैठे जानवर हमें
अपनी ग़िज़ा का निवाला
बना सकते हैं

نیلے آکاش پہ
چاند تارے اُگا رہے ہو
اُگاتے رہو
مجھے خواب میں
نیلے پانی کیوں دکھاتے ہو؟

❁

नीले आकाश पे
चाँद तारे उगा रहे हो
उगाते रहो
मुझे ख़्वाब में
नीले पानी क्यों दिखाते हो?

رات بھر نیلے پانیوں میں
پاؤں بھگوتی ہوں
صبح ہوتے ہی
ہاتھ میں کشکول تھما دیتے ہو
خواب میں بھیگے ہوئے پاؤں
دن بھر کی گداگری میں
کوڑ جیسے ہو جاتے ہیں
میرے ماتھے پہ
کوڑ زدہ کی Label
چسپاں کر کے
مجھے
تمہارے لوگ
اپنی بستیوں سے
نکال پھینکتے ہیں
نیلے آسمان تلے
پناہ لیتی ہوں
تم پھر
خواب سہانے دکھاتے ہو!

205—کتھارس

रात भर नीले पानियों में
पांव भिगोती हूं
सुबह होते ही
हाथ में कशकोल थमा देते हो
ख़्वाब में भीगे हुए पांव
दिन भर की गदागरी में
कोढ़ जैसे हो जाते हैं
मेरे माथे पे
कोढ़ ज़दा की लेबल
चस्पां करके
मुझे
तुम्हारे लोग
अपनी बस्तियों से
निकाल फेंकते हैं
नीले आस्मां तले
पनाह लेती हूं
तुम फिर
ख़्वाब सुहाने दिखाते हो!

اگر 43
اپنا 3 یا 4 کھودے
میں 4 یا 3 سال کے بچے کی طرح
ماں کے سینے میں منہ چھپا کر
ایک رات سولوں...

❁

अगर 43

अपना 3 या 4 खोदे

मैं चार या तीन साल के बच्चे की तरह

माँ के सीने में मुँह छुपाकर

एक रात सोलूं

بھیگے بادلوں سا بوجھل وجود
شب بھر کھودوں
وہ سارے خواب
جو بچپن سے اب تک کے سفر میں
میں نے اپنی مٹھی میں چھپائے ہوئے ہیں
ماں کے دامن میں چھپادوں
ہتھیلی کا پسینہ سکھادوں
اپنے روٹھے ہوئے من کو سہلادوں
میری ماں میرے من کو بچپن میں
منانا بول گئی تھیں
وہ میرے بوڑھے تن میں
بچے جیسا روتے روتے ہچکیاں بھرتا ہے—
پھر دن رات سوچتے ہوئے ذہن کو
ممتا کے نشہ میں سن کردوں
جو ایک رات
ماں کے سینے میں
منہ چھپا کے سولوں!

भीगे बादलों सा बोझल वजूद
शब भर खो दूं
वो सारे ख़्वाब
जो बचपन से अब तक के सफ़र में
मैंने अपनी मुट्ठी में छपाये हुए हैं
माँ के दामन में छुपादूं
हथेली का पसीना सुखा दूं
अपने रूठे हुए मन को सहला दूं
मेरी माँ मेरे मन को बचपन में
मनाना भूल गई थीं
वह मेरे बूढे तन में
बच्चे जैसा रोते-रोते हिचकियां भरता है
फिर दिन-रात सोचते हुए ज़ेहन को
ममता के नशे में सुन्ना कर दूं
जो एक रात
माँ के सीने में
मुँह छुपा के सो लूं!

✱

پھر میں پتھر ہو گئی
اور لے گئی ندی
مجھے اپنے ساتھ!
پانی مجھے کیسے تراشتا ہے
کہاں تک ساتھ بہاتا ہے
تم کیوں سوچنے لگو؟
میری چھینی ہوئی خوشیوں میں سے
تم ایک بھی خوشی
مجھے واپس کرتے
شاید پتھر بنتے بنتے
رہ جاتی میں

फिर मैं पत्थर हो गई
और ले गई नदी
मुझे अपने साथ!
पानी मुझे कैसे तराशता है
कहाँ तक साथ बहाता है
तुम क्यों सोचने लगो?
मेरी छीनी हुई खुशियों में से
तुम एक भी ख़ुशी
मुझे वापिस करते
शायद पत्थर बनते-बनते
रह जाती मैं

✻

حوصلہ تھک رہا ہے
میرے اپنوں پہ
تھوک رہا ہے
میں
اکیلے پن کے سناٹے میں
زینہ زینہ
اُتر رہی ہوں
تم یہ نہ سمجھنا
کہ میں
قدم جما رہی ہوں
جادو تمہارا جیت چکا ہے
میری ہمت ہار چکی ہے—

हौसला थक रहा है
मेरे अपनों पे
थूक रहा है
मैं
अकेलेपन के सन्नाटे में
ज़ीना-ज़ीना
उतर रही हूं
तुम यह न समझना
कि मैं क़दम जमा रही हूं
जादू तुम्हारा जीत चुका है
मेरी हिम्मत हार चुकी है—

٭

اُداسی میں بھیگے رہنا
کمرے میں قید رہنا
تمام وقت
مصروف رہنے سے
بہتر ہے
باحِس ہوتے ہوئے
بے حِس مشین بننے کا ڈھونگ
کاہے کو رچاتے ہو؟
سیاست کا جوش
تعلقات کی گرمی سا سیک
نہیں دے گا
بھلے ہی تعلقات
ہمیں اُداس کر کے
قید کر چکے ہوں

✻

उदासी में भीगे रहना
कमरे में क़ैद रहना
तमाम वक़्त
मसरूफ़ रहने से
बेहतर है
बा-हिस होते हुए
बे-हिस मशीन बनाने का ढोंग
काहे को रचाते हो?
सियासत का जोश
ताल्लुक़ात की गर्मी सा सेक
नहीं देगा–
भले ही ताल्लुक़ात
हमें उदास करके
क़ैद कर चुके हो

✵

اُداسی میں بھیگے رہنا
کمرے میں قید رہنا
تمام وقت
مصروف رہنے سے
بہتر ہے
باحِس ہوتے ہوئے
بےحِس مشین بننے کا ڈھونگ
کاہےکو رچاتے ہو؟
سیاست کا جوش
تعلقات کی گرمی سا سیک
نہیں دے گا
بھلے ہی تعلقات
ہمیں اُداس کر کے
قید کر چکے ہوں

उदासी में भीगे रहना
कमरे में क़ैद रहना
तमाम वक़्त
मसरूफ़ रहने से
बेहतर है
बा-हिस होते हुए
बे-हिस मशीन बनाने का ढोंग
काहे को रचाते हो?
सियासत का जोश
ताल्लुक़ात की गर्मी सा सेक
नहीं देगा–
भले ही ताल्लुक़ात
हमें उदास करके
क़ैद कर चुके हो

✿

سرکاری سڑک کی طرح
کبھی Cable تو کبھی Drain
اور کبھی پٹڑی کے لیے
توڑا گیا مجھے!
میں بھی تابندہ ہوتی گلشن میں
دھنک رنگ حال ہوتا میرا
نہ کہ یہ گرد و غبار ہوتا!
نہ اپنے پیارے بیری ہو جاتے
نہ سوکھ جاتے
پیار کے شیتل دھارے
جو تم مجھے
سرکاری سڑک نہ مان کے
کچھ اور مانتے

सरकारी सड़क की तरह
कभी केबल तो कभी ड्रेन
और कभी पटरी के लिए
तोड़ा गया मुझे!
मैं भी ताबन्दा होती गुलशन में
धनक रंग हाल होता मेरा
न कि यह गर्द-ओ-गुबार होता!
न अपने प्यारे बैरी हो जाते
न सूख जाते
प्यार के शीतल धारे
जो तुम मुझे
सरकारी सड़क न मान के
कुंछ और मानते

✿

وفا کو مشکوک ٹھہرانے والا
محبت کی خوشبو سے
ناواقف نہیں
مٹی کی مہک سے
ناآشنا ہے!
اس نے اپنا بدن ہی نہیں
ذہن بھی گروی رکھا ہے
وہ کیا جانے من کا سودا
وہ کیا پہچانے وطن کا چہرہ
گھر کا تقدس پامال کر کے
درویشوں کی بستی میں
مداری کا ناچ ناچنے والے سے
کیسا شکوہ؟

वफ़ा को मशकूक ठहराने वाला
मुहब्बत की ख़ुशबू से
नावाक़िफ़ नहीं
मिट्टी की महम से
ना-आशना है!
उस ने अपना बदन ही नहीं
ज़ेहन भी गिरवी रखा है
वो क्या जाने मन का सौदा
वो क्या पहचाने वतन का चेहरा
घर का तक़द्दुस पामाल करके
दरवेशों की बस्ती में
मदारी का नाच माचने वाले से
कैसा शिकवा?

مجھے میرا اکیلا پن
تھپتھپا رہا ہے
تمہیں تمہارا فرار
سہلا رہا ہوگا
محبت کھونے پہ ایسا
اکثر ہوتا ہے
ہمارا ٹھکرایا ہوا سہارا
ہمارا عشق ہو جاتا ہے—

❁

मुझे मेरा अकेलापन
थपथपा रहा है
तुम्हें तुम्हारा फ़रार
सहला रहा होगा
मुहब्बत खोने पे ऐसा
अक्सर होता है
हमारा ठुकराया हुआ सहारा
हमारा इश्क़ हो जाता है—

❁

میرے ہاتھ کی لکیریں
مٹ نہیں سکتی
تم اپنی سوچ کا زاویہ
بدل سکتے تھے
مجھے

✵

मेरे हाथ की लकीरें
मिट नहीं सकतीं
तुम अपनी सोच का ज़ाविया
बदल सकते थे
मुझे

بچا سکتے تھے

سوچتے سوچتے

میں نے اپنی نیندیں کھودیں

سوتے سوتے تم نے

مجھے کھودیا

تم مجھے کھو کے ہلکے ہو رہے ہو

میں نیندیں کھو کے بہت بھاری!

پہاڑ جتنی بھاری!

پتہ ہے

پہاڑ

دل بن جاتے ہیں

جب اپنائیت کا کوئی سُر

اُن سے ٹکراتا ہے

اجنبیت کے سناٹے میں،

مرے اور برف گرنے کے موسم میں

صرف

تمہارا انتظار درمیان ہے

बचा सकते थे
सोचते-सोचते
मैंने अपनी नींदें खो दी
सोते-सोते तुमने
मुझे खो दिया
तुम मुझे खो के हलके हो रहे हो
मैं नींदें खो के बहुत भारी!
पहाड़ जितनी भारी!
पता है
पहाड़
दिल बन जाते हैं
जब अपनाइयत का कोई सुर
उनसे टकराता है
अजनबियत के सन्नाटे में
मेरे और बर्फ़ गिरने के मौसम में
सिर्फ़
तुम्हारा इंतिज़ार दरमियां हैं

روو نہیں
ہنس
اُن کے اندھے ہونے پر
ہنس
پھر پتھر بن
جدائی سے پہلے!

❁

रो नहीं
हँस
उनके अंधे पर
हँस
फिर पत्थर बन
जुदाई से पहले!

٭

کبھی کبھی یوں لگتا ہے
جیسے میں
کوئی Wheel Chair ہوں
ایک سے ایک اپاہج
میرے پہیوں سے
اپنی منزل تک پہنچنے کو
فعالج زدہ سا
مجھ پہ بیٹھ جاتا ہے
میرے پہئے گھُماتا ہے
دائیں بائیں
آگے پیچھے...
منزل دِکھتے ہی
اچانک
میرے پہیوں سے
ہاتھ اٹھاتا ہے
اور مجھے
خالی کر دیتا ہے—

❁

कभी-कभी यूं लगता है
जैसे मैं
कोई wheel chair हूं
एक से एक अपाहिज
मेरे पहियों से
अपनी मंज़िल तक पहुँचने को
फ़ालिज ज़दा से
मुझ में बैठ जाते हैं
मेरे पहिये घुमाता हैं
दाँयें, बाँयें
आगे, पीछे.....
मंज़िल दिखते ही
अचानक
मेरे पहियों से
हाथ उठाता है
और मुझे
ख़ाली कर देता है

✿

محبت کے سحر سے ناواقف
تم کوئی تاریک غار جیسے ہو گئے ہو
جس میں روشنی کی طرف
جانے والے راستے کو میں
کھو چکی ہوں
میرے پاس سوائے خدا کی یاد کے
کچھ بھی نہیں
تم جیت کے تمام ہتھیاروں سے لیس
چاہو تو مرے لب خاموش کر دو
میری سانس روک دو
کہ پھر نچوڑ لو،
میری تمام صلاحیتیں

✽

मुहब्बत के सहर से नावाक़िफ़
तुम कोई तारीक ग़ार जैसे हो गए हो
जिसमें रोशनी की तरफ़
जाने वाले रास्ते को मैं
खो चुकी हूं
मेरे पास सिवाय ख़ुदा की याद के
कुछ भी नहीं
तुम जीत के तमाम हथियारों से लैस
चाहो तो मेरे लब ख़ामोश कर दो
मेरी सांस रोक दो
कि फिर निचोड़ लो
मेरी तमाम सलाहियतें

انسان ہونے کی!
اپنی خلوت میں
تم کوئی بھی
کوئی بھی ہتھیار استعمال کر سکتے ہو
مجھے کچھ بھی قرار دے سکتے ہو
لیکن سرہانے جو چراغ جل رہا ہے
ذرا اُسے بجھاتے جانا
موسم تمام جو مہک رہے ہیں
ذرا انہیں کچھ اوڑھا کے جانا
خودی کا موسم
خدا کا موسم
جنوں کا موسم
خزاں کا موسم، بے شمار موسم
چاہتوں کے برستے موسم
ذرا انہیں کچھ اوڑھا کے جانا
نہ جینا تمہیں کوئی موسم ہی آیا
نہ آیا تمہیں کوئی جذبہ نبھانا
کہ چراغ سرہانے
جو جل رہا ہے
ذرا اُسے تم
بجھاتے جانا

इन्सान होने की!
अपनी ख़लवत में
तुम कोई भी
कोई भी हथियार इस्तेमाल कर सकते हो
मुझे कुछ भी क़रार दे सकते हो
लेकिन सिरहाने जो चिराग़ जल रहा है
ज़रा उसे बुझाते जाना
मौसम तमाम जो महक रहे हैं
ज़रा उन्हें कुछ ओढ़ा के जाना
ख़ुदी का मौसम
ख़ुदा का मौसम
जुनूं का मौसम
ख़िज़ां का मौसम, बेशुमार मौसम
चाहतों के बरसते मौसम
ज़रा उन्हें कुछ ओढ़ा के जाना
न जीना तुम्हें कोई मौसम ही आया
न आया तुम्हें कोई जज़्बा निभाना
कि चिराग़ सिरहाने
जो जल रहा है
ज़रा उसे तुम
बुझाते जाना

وہ اپنا تھا
میرا کب تھا؟
میرا لباس ہوتے ہوئے
مجھے الزام پہناتا
خود Hanger پر لٹک جاتا

❋

वो अपना था
मेरा कब था?
मेरा लिबास होते हुए
मुझे इल्ज़ाम पहनाता
खुद Hanger पर लटक जाता

سب کو رِجھاتا...
میں اور ایک احساس
کہ اپنا
سارا من اس کو دے کے
سکھ بری آہٹ سے
اس کا من بھر دوں،
ایک سلوٹ میں بدل جاتے
محبت کی دھنک کے سارے رنگ
سیاہ پڑ جاتے
سلوٹ اور سیاہی
رَت جگے کے پالنے میں جھولتے
اور
ایک دوجے کی آنکھوں میں نیند کھوجتے

सब को रिझाता.....
मैं और एक एहसास
कि अपना
सारा मन उसको दे के
सुख भरी आहट से
उसका मन भर दूं
एक सिलवट में बदल जाते
मुहब्बत की धनक के सारे रंग
स्याह पड़ जाते
सिलवट और स्याही
रतजगे के पालने में झूलते
और
एक दूजे की आँखों में नींद खोजते

❋

دُکھ لفظ پہننے لگے
اب کس کو جی لوں؟
سُکھ سارے
وہی کہیں کیاریوں میں،
تمہارے صحن کے
رکھ آئی تھی...
اور زندگی؟
زندگی کو جینا
میرے کسی پنّے کی
کِسی سطر میں نہیں ملتا!
اور تم؟
پھول جیسا چہرہ لئے

✲

दुख लफ़्ज़ पहनने लगे
अब किसको जी लूं?
सुख सारे
वहीं कहीं क्यारियों में
तुम्हारे सहन की
रख आई थी.....
और ज़िन्दगी?
ज़िन्दगी को जीना
मेरे किसी पन्ने की
किसी सतर में नहीं मिलता!
और तुम?
फूल जैसा चेहरा लिए

کانٹے جیسے چبھتے ہو!
کانٹے بوڑھوں جیسے ہوتے ہیں
ہر سمے سب سے ناراض
ناراض ہوتے ہوتے
تم کہرا بن گئے ہو
ایسا کہرا
جو میرے قدموں اور منزلوں کے بیچ
پل پل گھنگھور ہوتا جاتا ہے
گھنگھور سناٹے میں
اچانک ایک یاد طلوع ہوتی ہے
"You are my Lady"
تمہاری آواز کی کھنک سے
میرے دل کے آتش داں میں
برف جلنے لگتی ہے
ہلکی سی آنچ
میرے وجود میں
گلابوں کا جنگل بسا دیتی ہے
پل بھر
خوشیوں کی مہک میں
میں بول جاتی ہوں کہ
اب کس کو جی لوں؟

काँटे जैसे चुभते हो!
काँटे बूढ़ों जैसे होते हैं
हर समय सब से नाराज़
नाराज़ होते- होते
तुम कोहरा बन गए हो
ऐसा कोहरा
जो मेरे क़दमों और मंज़िलों को बीच
पल-पल घनघोर होता जाता है
घनघोर सन्नाटे में
अचानक एक याद तुलूअ होती है
"You are my lady"
तुम्हारी आवाज़ की खनक से
मरे दिल के आतिशदान में
बर्फ़ जलने लगती है
हलकी सी आंच
मेरे वजूद में
गुलाबों का जंगल बसा देती है
पल भर
ख़ुशियों की महक में
मैु भूल ज़ाती हूं कि
अब किस को जी लूं?

✿

جب رشتے دُکھن
اور محبتیں
Ego میں بدل جاتی ہیں
من باغی ہو جاتا ہے
فرار کی وادیوں میں

जब रिश्ते दुखन
और मुहब्बतें
Ego में बदल जाती हैं
मन बाग़ी हो ज़ाता है
फ़रार की वादियों में

قبرستان جیسے رستوں سے
گزرتا ہے
آنسوؤں کی دنیا جیتا ہے!
خوشیوں کی دنیا جینے والے
اپنی خوابوں کی بستی اگاتے
سانپوں میں بدل جاتے ہیں
یا
Creeper بن جاتے ہیں
سانپ
قربتوں کو ڈستے ہیں
محبتوں کو ڈستے ہیں
اور ہم
بیگانے بن جاتے ہیں
Creeper اپنی جگہ بنا لیتے ہیں
اور ہم
اکھڑ جاتے ہیں

क़ब्रिस्तान जेसे रस्तों से
गुज़रता है
आँसुओं की दुनिया जीता है!
ख़ुशियों की दुनिया जीने वाले
अपनी ख़्वाबों को बस्ती उगाते-उगाते
सांपों में बदल जाते हैं
या
क्रीपर बन जाते हैं
सांप
कुरबतों को डसते हैं
मुहब्बतों को डसते हैं
और हम
बेगाने बन जाते हैं
Creper अपनी जगह बना लेते हैं
और हम
उखड़ जाते हैं!

نہ میں وجود تھی
نہ وہ عظیم تھا!
میں گھاس تھی
وہ کھرپی تھا
جذبوں کی ورشا میں

❁

न मैं वजूद थी
न वह अज़ीम था!
मैं घास थी
वो खुरपी था
जज़्बों की वर्षा में

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

میں اور وہ
بھیگتے رہے
میں اس کو پوجتی رہی
وہ مجھے کاٹتا رہا!
اب بات کھل گئی
میں کچھ بھی نہیں
گھاس!
وہ کچھ بھی نہیں
گھسیارا
اگنے اور کاٹنے کی سوائے
کر ہی کیا سکتے ہیں؟
زندگی ہم دونوں پہ
ننگی ہو کے ہنستی ہے!

मैं और वह
भीगते रहे
मैं उसको पूजती रही
वह मुझक काटता रहा!
अब बात खुल गई
मैं कुछ भी नहीं
घास!
वह कुछ भी नहीं
घसियारा
उगने और काटने के सिवाय
कर ही क्या सकते हैं?
ज़िन्दगी हम दोनों पे
नंगी होके हंसती है!

جہاں گلاب بوئے تھے
شمشمان اُگ آیا ہے
چاندنی رات...
چماڈ توت کے درخت سے
پیٹھ رگڑ رگڑ کے

❁

जहाँ गुलाब बोये थे
शमशान उग आया है
चाँदनी रात.....
चमार तूत के दरख़्त से
पीठ रगड़-रगड़ के

سکون پا رہا ہے،
میری پیٹھ پر،
میرے بدن کی خوشبوؤں کا
پھوڑا نکل آیا ہے!
دوپہر کو گھر سے نکلی لڑکی
ڈھیر سارے پتے سر پہ لادے
گھر لوٹ رہی ہے
الاؤ تاپے گی
سب کے سنگ
ٹھنڈی رات
صبح کی نکلی ہوئی میں
ٹھٹھر جاؤں گی اکیلی
ساری رات...
سنوں گی گونگی رات
اوڑھوں گی گہری رات
میری لال ہری
نیلی پیلی شمعیں
تحلیل ہو چکی ہیں
جادو ٹونے میں
کنواری رات...

सुकून पा रहा है
मेरी पीठ पर
मेरे बदन की ख़ुशबुओं का
फोड़ा निकल आया है!
दोपहर को घर से निकली लड़की
ढेर सारे पत्ते सर पर लादे
घर लौट रही है
अलाव तापेगी
सब के संग
ठंडी रात
सुबह की निकली हुई मैं
ठिठुर जाऊँगी अकेली
सारी रात.....
सुनूंगी गुँगी रात
ओढ़ूंगी गहरी रात
मेरी लाल, हरी
नीली, पीली शम्में
तहलील हो चुकी हैं
जादू-टोने में
कंवारी रात.....

وہ
سوچ کی سِل پر
انجانے ہیولوں کو
تراش رہی ہے
اور ٹبر سارا
کھول رہا ہے!
پھر اُس کے ذہن کو
سُن کر دو
وہ سوچ کی سِل پر نہیں
پتھر کی سِل پر
چٹنی پیس لے گی
تم سب
چٹخارہ کے ساتھ
نوالہ لوگے

वह
सोच की सिल पर
अनजाने हवेलों को
तराश रही है
और टबर सारा
खौल रहा है!
फिर उसके ज़ेहन को
सुन्न कर दो
वह सोच की सिल पर नहीं
पत्थर की सिल पर
चटनी पीस लेगी
तुम सब
चटखारे के साथ
निवाला लोगे

✿

اس کا وجود
ابھی بھی کراہ رہا ہے
یہ جانتے ہوئے بھی
کہ جیون اپنے اندراج میں
اس کے تن کے سوائے
کچھ بھی نہیں رکھتا
اس کا من کیوں چیختا ہے؟
مولا!
تمہارا کوئی ساز نہیں
جس پہ اس کی دھن بن جائے!
نہیں تو یہ چیخیں
یہ چیخیں
اس کو دیوانہ کہلائیں گی
نہ کہ انا عزت اور
اختیار کے ساتھ
زندہ رہنے کا
اختیار دلوائیں گی

उसका वजूद
अभी भी कराह रहा है
यह जानते हुए भी
कि जीवन अपने इंदराज में
उसके तन के सिवाय
कुछ भी नहीं रखता
उसका मन क्यों चीख़ता है?
मौला!
तुम्हारा कोई साज़ नहीं
जिसपर उसकी धुन बन जाये!
नहीं तो ये चीख़ें
यह चीख़ें
उस को दीवाना कहलायेंगी
न कि अना, इज़्ज़त और
इख़तियार के साथ
ज़िंदा रहने को
इख़तियार दिलवायेंगी

ہماری جدائی
اُس دکھ کی اولاد ہے
جو
معمولی لوگوں کی صحبت میں
تمہارے ذہن نے غلیظ ہو کے
میرے پوتر خیالات پر

✻

हमारी जुदाई
उस दुख की औलाद है
जो
मामूली लोगों की सोहबत में
तुम्हारे ज़ेहन ने ग़लीज़ होके
मेरे पवित्र ख़्यालात पर

تھوک کے
جما تھا—
پھر تم نے
غصہ ہی نہیں
ڈھیر ساری جھنجھلاہٹ بھی
جنمی تھی
میں اگرچہ
زمین جیسی
خاموشی سے
سب کچھ
جذب کرتی رہی ہوں
پر میری من کی اوڑھنی پر
تمہارا قہر
تیل کے داغ کی طرح
پھیلتا جارہا ہے!
پل بھر کے لیے
تھم جاؤ
تھوڑی سی فہم کی مٹی
اس اوڑھنی پر لگادو
میرے من کا
کچھ تو بچالو!

थूक के
जन्मा था–
फिर तुमने
गुस्सा ही नहीं
ढेर सारी झुंझलाहट भी
जन्मी थी
मैं अगरचे
ज़मीन जैसी
ख़ामोशी से
सब कुछ
जज़्ब करती रही हूं
पर मेरी मन की ओढ़नी पर
तुम्हारा क़हर
तेल के दाग़ की तरह
फ़ैलता जा रहा है!
पल भर के लिए
थम जाओ
थोड़ी सी फ़हम की मिट्टी
इस ओढ़नी पर लगा दो
मेरे मन को
कुछ तो बचा लो!

✻

تمہاری سوچ
تمہارے حالات سے میل نہیں کھاتی
مجھے کیوں مسترد کرتے ہو!
کون سا منصوبہ
تمہیں اپنی زمینوں سے
بے دخل کرتا ہے
میرا مقدر اور
تمہارا فرار ہے!
تمہاری محبت
ہوا کا ایک ریلا تھا
میری وفا میں
وہ ایک چسکی محبت
ابھی بھی زندہ ہے
اور تم فرار میں
صداقت کی موت
جی رہے ہو!

❋

तुम्हारी सोच
तुम्हारे हालात से मेल नहीं खाती
मुझे क्यों मुसतरद करते हो
कौन सा मन्सूबा
तुम्हें अपनी ज़मीनों से
बेदख़ल करता है
मेरा मुकद्दर और
तुम्हारा फ़रार है!
तुम्हारी मुहब्बत
हवा का एक रेला था
मेरी वफ़ा में
वह एक चुस्की मुहब्बत
अभी भी ज़िन्दा है
और तुम फ़रार में
सदाक़त की मौत
जी रहे हो!

انہوں نے اپنے
سارے تلخ سچ
میرے سینے میں
دفن کر دیئے
اور زندگی کے ناچ میں
شامل ہو گئے
میں قبر کی مانند شانت نہیں
بس خاموش ہوں!
موت کی مہک
میرے انگ انگ میں
پھیل چکی ہے
جس سے سونگھتے ہی
وہ
مجھے پاگل قرار دینے لگتے ہیں
میں
اُن کا ایسے احترام کرتی ہوں
جیسے موت بندے کا

❁

उन्होंने अपने
सारे तल्ख़ सच
मेरे सीने में
दफ़न कर दिए
और ज़िंदगी के नाच में
शामिल हो गए
मैं क़ब्र की मानिंद शांति नहीं
बस ख़ामोश हूं!
मौत की महक
मेरे अंग-अंग में
फैल चुकी है
जिससे सूंघते ही
वह
मुझे पागल क़रार देने लगते हैं
मैं
उनका ऐसे एहतिराम करती हूं
जैसे मौत बन्दे का

✹

دیوار پر مکڑی
Tube Light کو چھو رہے مچھروں کو
ایک ایک کر کے
اپنی بانہوں میں دبوچ کر
نگل رہی ہے—

✵

दीवार पर मकड़ी
tube light को छू रहे मच्छरों को
एक-एक करके
अपनी बाँहों में दबोच कर
निगल रही है–

٭

دیوار پر مکڑی
Tube Light کو چھو رہے مچھروں کو
ایک ایک کر کے
اپنی بانہوں میں دبوچ کر
نگل رہی ہے

❁

दीवार पर मकड़ी
tube light को छू रहे मच्छरों को
एक-एक करके
अपनी बाँहों में दबोच कर
निगल रही है–

مجھے

تم یاد آرہے ہو
جدا ہوتے سمے
تم نے بھی
اِسی شدت سے مجھے
اپنی بانہوں میں دبوچ لیا تھا!
تمہارے مضبوط بازوؤں کا لمس
میری بانہوں میں کراہ رہا ہے
لیکن تم مجھے
سپاہی کی طرح اپنے پیچھے
ہر اُمید سے محروم چھوڑ گئے تھے!
مکڑی کی طرح
نِگل کیوں نہیں لیا مجھے!
وہ رکی ہوئی C.D ....
یہ خالی Bed ....
تمہاری گونج سے بھرا گھر
اور
رحم کے جذبہ سے خالی تم
ہر پل
میرا گلہ نہ گھوٹتے!

मुझे
तुम याद आ रहे हो
जुदा होते समय
तुम ने भी
इसी शिद्दत से मुझे
अपनी बाँहों में दबोच लिया था!
तुम्हारे मज़बूत बाजुओं को लम्स
मेरी बाँहों में कराह रहा है
लेकिन तुम मुझे
सिपाही की तरह अपने पीछे
हर उम्मीद से महरूम छोड़ गऐ थे!
मकड़ी की तरह
निगल क्यों नहीं लिया मुझे!
वह रूकी हुए C.D.......
यह खाली bed......
तुम्हारी गूंज से भरा घर
और
रहम के जज़्बे से ख़ाली तुम
हर पल
मेरा गला न घोंटते!

❁

زمینوں اور جاگیروں کی
وارث نہیں
میں
جاگیرداری کے
دکھوں اور آنسوؤں کی
وارث ہوں
اور بے بس ہوں —
اپنی معصوم محبت کو
میری بے بسی والی محبت میں
بالغ کر دو
مجھے محکوم نہیں
دوست بنا کر
زندہ کر دو...

ज़मीनों और जागीरों की
वारिस नहीं
मैं
जागीरदारी के
दुखों और आँसुओं की
वारिस हूं
और बेबस हूं–
अपनी मासूम मुहब्बत को
मेरी बेबसी वाली मुहब्बत में
बालिग़ कर दो
मुझे महकूम नहीं
दोस्त बना कर
ज़िंदा कर दो.....

میں کسی کا خواب نہیں
تمہارے
ایک خواب کی تعبیر ہوں!
تمہارا بکھراؤ
اتنا عجیب ہے

मैं किसी का ख़्वाब नहीं
तुम्हारे
एक ख़्वाब की ताबीर हूं!
तुम्हारा बिखराव
इतना अजीब है

کہ تم
ایک خواب کی تعبیر بھی
پال نہ سکے!
نہ محبت لینا آیا
نہ محبت دینا...
محبت وہ خواب ہے
جس کے سنگ
اور کوئی خواب
نہیں پلتا
یہ جب پھوٹتی ہے
تو بس
صرف اِسی کو سینچنا ہوتا ہے—
ہم اب باقی خواب بھی
نہیں سینچ سکتے!
محبت کی کمی کے باعث
ہم دونوں
اِدھر اُدھر بھٹک جائیں گے...

कि तुम
एक ख़्वाब की ताबीर भी
पाल न सके!
न मुहब्बत लेना आया
न मुहब्बत देना.....
मुहब्बत वह ख़्वाब है
जिसके संग और कोई ख़्वाब
नहीं पलता
यह जब फूटती है
तो बस
सिर्फ़ इसी को सींचना होता है–
हम अब बाक़ी ख़्वाब भी
नहीं सींच सकते!
मुहब्बत की कमी के बाइस
हम दोनों
इधर-उधर भटक जायेंगे....

✹

بنجر پر ترس کھاتے ہیں
تشدد نہیں کرتے!

وہ
اپنی زرخیزی میں
جو کچھ دے چکے ہوتے ہیں

❋

बंजर पर तरस खाते हैं
तशद्दुद नहीं करते
वह
अपनी ज़रख़ेज़ी में
जो कुछ दे चुके होते हैं

دے چکے ہوتے ہیں
تم تشدد سے
اب کیا وصولتے ہو!
نئی اداسی
نیا دُکھ...
بار بار جنم لینے کے باعث
اُداسی اور دکھ
ہردم تازہ رہتے ہیں
اور ہم
مرجھا جاتے ہیں
پھر ہم مرجھائے ہوئے ہوں
کہ کھلے ہوئے
زندگی
کوئی رعایت نہیں دیتی
ہمیں اس کا سولہ سنگار کر کے
گھونگھٹ نکالنا پڑتا ہے

दे चुके होते हैं
तुम
तशद्दुद से
अब क्या वसूलते हो!
नहीं उदासी
नया दुख.....
बार-बार जन्म लेने के बाइस
उदासी और दुख
हर दम ताज़ा रहते हैं
और हम
मुरझा जाते हैं
फिर हम मुरझाये हुए हैं
कि खिले हुए
ज़िन्दगी
कोई रियायत नहीं देती
हमें इस का सोलह सिंगार करके
घूँघट निकालना पड़ता है

✿

میرے آقا
میں تمہارے
اور صرف تمہارے ذریعہ
زندہ رہتی
جو مجھے
میری شناخت کی خاطر
ہانکا نہ جاتا!
باقی میں تمہیں
میرا اگلا گھونٹنے سے
نہیں روکتی...
جانتی ہوں
یہی لمحے
تمہارے مرد ہونے کا
جواز ہیں—

❁

मेरे आक़ा
मैं तुम्हारे
और सिर्फ़ तुम्हारे ज़रिये
ज़िन्दा रहती
जो मुझे
मेरी शिनाख़्त की ख़ातिर
हांका न जाता!
बाक़ी मैं तुम्हें
मेरे गला घोंटने से
नहीं रोकती.....
जानती हूं
यही लम्हे
तुम्हारे मर्द होने का
जवाज़ हैं–

جادوٹونا کہ سحر
جس نے بھی
محبت کو نفرت میں بدلا،
میں
تمہاری دی ہوئی اذیتوں کو
مجھے بدلنے سے

❁

जादू टोना कि सहर
जिसने भी
मुहब्बत को नफ़रत में बदला,
मैं
तुम्हारी दी हुई अज़ीयतों को
मुझे बदलने से

روک رہی ہوں!
ہمارا ملن
کرم تھا مولا کا
ہماری جدائی
کھیل ہے شیطان کا
تم
جس روز
کرم اور کھیل کا انتر
سمجھ سکو
میں اُس دن کے
انتظار کے سوا
کچھ نہیں کرتی
اپنے آپ کو
جھوٹی تسلی دیتی ہوں
کہ اُس دن شاید
تم مجھ سے
دوبارہ محبت کرنے لگو
ابھی بھی
میں خود کو
پتھر بننے سے
روکے ہوئے ہوں—

रोक रही हूं!
हमारा मिलन
करम था मौला का
हमारी जुदाई
खेल है शैतान का
तुम
जिस रोज़
करम और खेल का अंतर
समझ सको
मैं उस दिन के
इंतिज़ार के सिवा
कुछ नहीं करती
अपने आप को
झूठी तसल्ली देती हूं
कि उस दिन शायद
तुम मुझ से
दुबारा मुहब्बत करने लगो
अभी भी
मैं ख़ुद को
पत्थर बनने से
रोके हुए हूं-

❁

مجھے کہاں جا کے رونا ہے!
مجھے کس کے سنگ ہنسنا ہے!
جن کے درد سہلانے اور
جن کی
خوشیوں کے کھیل
سجانے میں
زندگی گزار دی
ان کے یہاں میرا
رونا، ہنسنا
دونوں ممنوع ہیں...
یہ بے حیثیتی
تمام بے حیثیتوں سے
بڑھ کر ہے!

मुझे कहाँ जाके रोना है!
मुझे किसके संग हँसना है!
जिनके दर्द सहलाने और
जिनकी
खुशियों के खेल
सजाने में
ज़िंदगी गुज़ार दी
उन के यहाँ मेरा
रोना, हँसना
दोनों ममनूअ हैं.....
ये बे-हैसियती
तमाम बेहैसियतों से
बढ़ कर है!

❋

مرد نے
مجھے نوچ ڈالا!
رات بھر
روتے دھوتے
چیختے چلاتے
میں
بیٹی بہن بیوی
سب کو سنوارتی رہی
لیکن
یہ کیسی صبح ہو رہی ہے
جس کی روشنی میں
اس کی کھر بچیں
بیٹی بہن
اور بیوی
سب کو
پتھر کی طرح
تراش رہی ہے!

❁

मर्द ने
मुझे नोंच डाला
रात भर
रोते धोते
चीख़ते चिल्लाते
मैं
बेटी, बहन, बीवी
सबको संवारती रही
लेकिन
यह कैसी सुबह हो रही है
जिसकी रोशनी में
उसकी खुरेचें
बेटी, बहन
और बीवी
सब को
पत्थर की तरह
तराश रही है!

جب بھی میں
اپنے دکھ
الفاظ کرتی ہوں
طلاق پاتی ہوں
تم جب جب

जब भी मैं
अपने दुख
अल्फ़ाज़ करती हूं
तलाक़ पाती हूं
तुम जब-जब

اپنی پسلی کا گھاؤ
بھرتے ہو
میں
بیٹی، بہن
بیوی، ماں
سب کچھ
بن جاتی ہوں
میں تمہیں
خلاہ نہیں
اپنی آغوش دے دیتی ہوں
تم اپنا گھاؤ بھرتے ہی
مجھے
اضافی مخلوق بنا دیتے ہو
میں تمہیں
کیونکر تخلیق کروں؟

अपनी पसली का घाव
भरते हो
मैं बेटी, बहन
बीवी, माँ
सब कुछ
बन जाती हूं
मैं तुम्हें
खुलाह नहीं
अपनी आग़ोश दे देती हूं
तुम अपना घाव भरते ही
मुझे
इज़ाफ़ी मख़लूक़ बना देते हो
मैं तुम्हें
क्योंकर तख़लीक़ करूं?

تمہاری بزدلی گھڑی گھڑی
راستے بدلتی رہی
میری بے بسی بھی
مرحلے بدلتی رہی
پر تمہارے راستوں کا بدلاؤ

❁

तुम्हारी बुज़दिली घड़ी-घड़ी
रास्ते बदलती रही
मेरी बेबसी भी
मरहले बदलती रही
पर तुम्हारे रास्तों का बदलाव

میں ہی سہتی رہی
میری سوچ
کتنی پگڈنڈیوں سے
لڑکھتی رہی
تم کیا جانو
تم کیا مانو
تم کہاں ہو میری جان؟
تم کہاں ہو!
اب بھی میں تم کو
کاغذ پہ سجاتی ہوں
ہر شام...
اب بھی میں بھولنا چاہتی ہوں
کہ وفا تمہارا سبھاؤ نہیں!
اب بھی پل پل
ڈھیرے سارے لمحے
پلٹتی ہوں
اس گونگے پل کی تلاش میں
جو تمہیں بتا نہ سکا
کہ میرے من کی بانہیں
تمہارا فرار بھینچ لیتی ہیں
اور میں تمہیں

मैं ही सहती रही
मेरी सोच
कितनी पगडंडियों से
लुढ़कती रही
तुम क्या जानो
तुम क्या मानो
तुम कहाँ हो मेरी जान?
तुम कहाँ हो?
अब भी मैं तुम को
काग़ज़ पे सजाती हूं
हर शाम!
अब भी मैं भूलना चाहती हूं
कि वफ़ा तुम्हारा स्वभाव नहीं!
अब भी मैं पल-पल
ढेर सारे लम्हे
पलटती हूं
उस गूंगे पल की तलाश में
जो तुम्हें बता न सका
कि मेरे नम की बाँहें
तुम्हारा फ़रार भींच-लेती हैं
और मैं तुम्हें

اوڑھ لیتی ہوں...

تم کیا جانو

تم کیا مانو

تم کہاں ہو میری جان؟

تم کہاں ہو!

آنکھ بھر آئی ہے

اور پلکیں اب بھی وہ خواب

بکھرنے نہیں دیتیں

کہ تم مجھے

زخم کی طرح چھپالو گے

ایک لازوال ملن نبھالو گے

تم کیا جانو

تم کیا مانو

تم کہاں ہو میری جان؟

تم کہاں ہو!

ओढ़ लेती हूं.....
तुम क्या जानो
तुम क्या मानो
तुम कहाँ हो मेरी जान?
तुम कहां हो?
आंख भर आई है
और पलकें अब भी वह ख़्वाब
बिखरने नहीं देतीं
कि तुम मुझे
ज़ख़्म की तरह छुपा लोगे
एक लाजवाब मिलन निभा लोगे
तुम क्या जानो
तुम क्या मानो
तुम कहाँ हो मेरी जान?
तुम कहाँ हो?

❁

کوئی اختلاف نہیں تھا
ہمارے بیچ
نہ ہی ایک دوجے سے
نفرت کرتے تھے ہم
نہ جانے کس نے
ہمیں الگ کرنے والے
آثار جنمے !

❁

कोई इख़्तिलाफ़ नहीं था
हमारे बीच
न ही एक दूजे से
नफ़रत करते थे हम
न जाने किस ने
हमें अलग करने वाले
आसार जन्मे!

نہ صرف ایک دوسرے کو
پانے کی خوشی تھی ہمیں
ایک دوسرے کی محبت میں ہم
زندگی کی مانگ بھرتے...
لذت خانماں برباد رہنے کی
خاک کرتے...
میری جوگن
اس کا فرار
اپنے من میں جذب کرتی
جیسے ہم میں سے کوئی
کہیں گروی نہ ہو
جیسے پرکرتی اور پُرش ہو
جیسے ہم
ہمت کھوئے بغیر
پرسکوں قطع امید تک پہنچ گئے ہوں
چھوڑیئے کیا فرق پڑتا ہے!
ہمیں الگ کرنے والے آثار
بہرحال کسی نے جنمے
لیکن خدارا کوئی طے کرے
وہ وحشی ہے
یا ہم تیاگی—!

न सिर्फ़ एक दूसरे को
पाने की ख़ुशी थी हमें
एक दूसरे की मोहब्बत में हम
ज़िन्दगी की मांग भरते
लज़्त-ए-ख़ानमां-बरबाद रहने की
ख़ाक करते
मेरी जोगन
उसका फ़रार
अपने मन में जज़्ब करती
जैसे हम में से कोई
कहीं गिरवी न हो
जैसे प्रकृति और पुरूष हो
जैसे हम
हिम्मत खोये बग़ैर
पुरसुकून क़त्अ-ए-उम्मीद तक पहुँच गए हो
छोड़िए क्या फ़र्क़ पड़ता है
हमें अलग करने वाले आसार
बहरहाल किसी ने जन्मे
लेकिन ख़ुशी कोई तय करे
वह वहशी है
या हम त्यागी-

❋

پو پھٹتے ہی
بہت سارے کوؤں کی
ایک ساتھ کاؤں کاؤں نے
مجھے نیند سے جگایا
کھڑکی کا پردہ کھِسکایا
تو دیکھا
بجلی کے کھمبے پہ ایک کوّا
لٹک رہا تھا
غالباً برقی رو نے
اُس کی جان لی تھی
اُس کھمبے سے چاروں اور

✽

पौ फटे ही
बहुत सारे कौओं की
एक साथ काँव-काँव ने
मुझे नींद से जगाया
खिड़की का परदा खिसकाया
तो देखा
बिजली के खम्मे पर एक कौआ
लटक रहा था
ग़ालिबन बरक़ी रौ ने
उसकी जान ली थी
उस खम्में से चारों ओर

بستی میں
تاروں کا جال پھیلا تھا
ہر تار
کاؤں کاؤں کرتے کوؤں سے
ایسے بھرا تھا جیسے کوئی مالا
کالے دانوں کی...
یہ نظارہ دیکھ کر
میں ششدر رہ گئی
اپنے بوسیدہ گھر کی تیسری منزل میں
جہاں تقدیر کے قہر نے
مجھے لٹکایا ہوا تھا
لیکن
میرے لٹک جانے پہ
شور کیا
کوئی آواز سنائی نہیں دی
کیا میری بستی کے واسی
اِن کالے کوؤں سے
کچھ سیکھ نہیں سکتے
کیا ہم بھی اُسی کی تخلیق ہیں
جس کے یہ
کالے کوے؟

बस्ती में
तारों का जाल फैला था
हर तार
काँव-काँव करते कौऔं से
ऐसे भरा था जैसे कोई माला
काले दानों की.....
ये नज़्ज़ारा देखकर
मैं शश्दर रह गई
अपने बोसीदा घर की तीसरी मंज़िल में
जहाँ तक़दीर के क़हर ने
मुझे लटकाया हुआ था
लेकिन
मेरे लटक जाने पे
शोर किया
कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी
क्या मेरी बस्ती के बासी
इन काले कौऔं से
कुछ सीख नहीं सकते
क्या हम भी उसी की तख़्लीक़ हैं
जिसके ये
काले कौवे?

✼

اپنی سرشاری میں
وہ
بلا وجہ مجھ سے
بچھڑ گیا...
بے رحم سوچ میں
میں

अपनी सरशारी में

वो

बिला वजह मुझसे

बिछड़ गया...

बेरहम सोच में

मैं

اپنے آپ سے
دستبردار ہوگئی—
اُن سب سے
جن کے بغیر نوالہ
میرے حلق سے نہیں اُترتا
روٹھ کے لباس میں
میں اکیلی ہی نہیں
اجنبی ہوگئی ہوں
ان سب سے
جن کے بغیر نوالہ
میرے حلق سے نہیں اترتا
سب کے لیے
وہ آوازیں
جو میری اپنی تھیں
کس کی ہوگئیں؟
وہ چہرے
جن کی مسکراہٹوں کو
میں نے اپنے خون سے
سینچا تھا
کیا ہوئے؟
کوئی میرا ہو

अपने आपसे
दस्तबरदार हो गई–
उन सबसे
जिनके बग़ैर निवाला
मेरे ह़लक़ से नहीं उतरता
रूठ के लिबास में
मैं अकेली ही नहीं
अजनबी हो गई हूं
इन सबसे
जिनके बग़ैर निवाला
मेरे हलक़ से नहीं उतरता
सब के लिए!
वो आवाज़ें
जो मेरी अपनी थीं
किस की हो गईं?
वो चेहरे
जिनकी मुस्कुराहटों को
मैंने अपने ख़ून से
सींचा था
क्या हुए?
कोई मेरा हो

اِس کی توقع مجھے نہیں
تم پل بھر
بس ٹھہر جاؤ
میرے پاس...
بہت ڈرایا ہے مجھے
بے رحم سوچوں نے
انوکھا بنایا ہے مجھے
مزاجوں کے قہر نے
کیا تم کہیں
ٹھہرنا نہیں چاہتے؟
محبت کرنا نہیں چاہتے؟
محبت زندگی کا اعتبار ہے
محبت ایک سرگوشی ہے
جو مسرت بن کر
ہماری نسوں میں
دوڑتی ہے
اور ہم
زندگی کے پیڑ پر
کھلنے لگتے ہیں—

इसकी तवक़्क़ो मुझे नहीं
तुम पल भर
बस ठहर जाओ
मेरे पास...
बहुत डराया है मुझे
बेरहम सोचों ने
अनोखा बनाया है मुझे
मिज़ाजों के क़हर ने
क्या तुम कहीं
ठहरना नहीं चाहते?
मुहब्बत करना नहीं चाहते?
मुहब्बत ज़िंदगी का एतबार है
मुहब्बत एक सरगोशी है
जो मुसर्रत बनकर
हमारी नसों में दौड़ती है
और हम
ज़िंदगी के पेड़ पर
खिलने लगते हैं–

✵

قربتوں میں
اذیتیں بھی
سر اُٹھاتی ہیں
ہمیں چوراہوں پہ پھینکتی ہیں
اور ہماری تنہائیوں کا

❀

कुरबतों में
अज़ीयतें भी
सर उठाती हैं
हमें चौराहों पे फैंकती हैं
और हमारी तंहाइयों का

دامن پکڑے
ہمارے قدموں سے
اُلجھتی رہتی ہیں!
ملن میں کچھ چیخیں
بے ہنگم بھی ہوتی ہیں
شور مچاتی ہیں
من کی بستی اُجڑ جاتی ہے
ہم اکیلے پڑ جاتے ہیں
بس نہ پوچھو
نہ پوچھو
کِسی کا ساتھ
بچھڑنے کا سبب
نہ پوچھو
لوگوں کی بستی میں
اکیلے ہونے کا سبب...

दामन पकड़े
हमारे क़दमों से
उलझती रहती हैं!
मिलन में कुछ चीख़ें
बेहंगम भी होती हैं
शोर मचाती हैं
मन की बस्ती उजड़ जाती है
हम अकेले पड़ जाते हैं
बस न पूछो
न पूछो
किसी का साथ
बिछड़ने का सबब
न पूछो
लोगों की बस्ती में
अकेले होने का सबब...

بچہ آنکھوں میں خواب
ہتھیلیوں میں زندگی لیے
اُس کی آغوش میں مسکراتا ہے
وہ اُسے
اپنے چہرے کی جھریاں
گِنواتا ہے
نہ صرف معصوم ہتھیلیوں سے
زندگی چھوٹ جاتی ہے
خواب بھی Virgin آنکھوں سے
گِر جاتے ہیں
معصوم چہرے کی آنکھیں
بوڑھی ہو جاتی ہیں
نہ کوئی آغوش
... نہ خواب
... نہ زندگی
وہ دنیا کی بھیڑ میں
مہلق کھڑا ہو جاتا ہے

✵

बच्चा आँखों में ख़्वाब
हथेलियों मे ज़िंदगी लिए
उसकी आग़ोश में मुस्कुराता है
वो उसे
अपने चेहरे की झुर्रियाँ
गिनवाता है
न सिर्फ़ मासूम हथेलियों से
ज़िंदगी छूट जाती है
ख़्वाब भी Virgin आँखों से
गिर जाते हैं
मासूम चेहरे की आँखें
बूढ़ी हो जाती हैं
न कोई आग़ोश
..... न ख़्वाब
....न ज़िंदगी
वो दुनिया की भीड़ में
मोहल्लक़ खड़ा हो जाता है

✻

اِنتظار اُداسی میں
خوشبو وسوسوں میں
اور سنگار
نیل میں بدل گئے تھے
جب وہ آیا...
کِسی بے وفا ملن کا جما ہوا
وہ اَن چاہا وجود
وفا کیا
محبت نہیں کر سکتا!
اپنی زمینوں سے
بے دخل ہوا ہوا
سمندر پار پناہ لیتا ہے
اپنے کھیت سے
روٹی کمانے سے قاصر
فرنگوں کے ہاں
عزت کماتا ہے—

❋

इंतज़ार उदासी में
ख़ुशबू वसवसों में
और सिंगार
नील में बदल गये थे
जब वो आया.....
किसी बे वफ़ा मिलन का जन्मा हुआ
वो अनचाहा वजूद
वफ़ा क्या
मुहब्बत नहीं कर सकता!
अपनी ज़मीनों से
बेदख़ल हुआ हुआ
समुंदर पार पनाह लेता है
अपने खेत से
रोटी कमाने से क़ासिर
फ़रंगियों के हाँ
इज़्ज़त कमाता है–

زہریلی باتیں
زہریلی راتوں کی طرح
نہ صرف قرار لوٹتی ہیں
ہمارا نصیب بھی لُٹتی ہیں
زبان کا زہر

❋

ज़हरीली बातें
ज़हरीली रातों की तरह
न सिर्फ़ क़रार लूटती हैं
हमारा नसीब भी बुनती हैं
ज़बान का ज़हर

کان میں ٹھہرتا نہیں
رَگ و پے میں دوڑتا ہے
تن من دونوں
زہریلے ہو جاتے ہیں
پیار تو کہاں ہے؟
تمہاری ایک بوند
مجھے اب بھی
اب بھی بچا سکتی ہے
تم ہی جیون کو
جیون دینے والے
زندگی سے
زہر نچوڑنے والے
خدا ہو...
تم ہی
سانسوں کو
سانسوں میں پرونے والے
جیون کی ناؤ کھینے والے
ناخدا ہو...

कान में ठहरता नहीं
रगो पै में दौड़ता है
तन मन दोनों
ज़हरीले हो जाते हैं
प्यार तो कहाँ है?
तुम्हारी एक बूंद
मुझे अब भी
अब भी बचा सकती है
तुम ही जीवन को
जीवन देने वाले
ज़िंदगी से
ज़हर निचोड़ने वाले
ख़ुदा हो...
तुम ही
साँसों को
साँसों में पिरोने वाले
जीवन की नाव खेने वाले
नाख़ुदा हो...

اب بھی کیا تم
ویسے ہی کھنکتے ہو
جیسے میری محبت میں کھنکتے تھے کبھی!
کہ کھوج میں خوشی کی
جگ جگ پھرتے
کھودی وہ کھنک کہیں؟
پل بھر تھمتے
جھانکتے اپنے اندر
مل جاتی تمہیں خوشی
وہی کہیں!
یا پھر کسی من میں
گھر بساتے
تمہاری چھت ڈھ نہیں جاتی
اوروں کے قہقہوں میں!
یا پھر بھیگ جاتے
محبت کی اوس میں
شبنم تم پہ نچھاور ہوتی
یوں سانسیں تک

अब भी क्या तुम
वैसे ही खनकते हो
जैसे मेरी मुहब्बत में खनकते थे कभी!
कि खोज में ख़ुशी की
जग जग फिरते
खो दी वो खनक कहीं?
पल भर थमते
झांकते अपने अंदर
मिल जाती तुम्हें ख़ुशी
वही कहीं!
या फिर किसी मन में
घर बसाते
तुम्हारी छत ढह नहीं जाती
औरों के क़हक़हों में!
या फिर भीग जाते
मुहब्बत की ओस में
शबनम तुम पे निछावर होती
यूं साँसें तक

جلاوطن نہ ہوتی تمہاری!
لیکن عشق کا رَت جگا
آنکھوں میں آنجے
میں تمہاری محبوبہ جیسے
کیوں نہیں سوچتی؟
تم میری من کی دنیا کے
بس اپنے تھے میرے تھے...
شاید تمہارے انتظار میں
میں اتنی مقدس ہوگئی ہوں
جیسے میں محبوبہ نہیں
ماں ہوں!
لیکن یہ سب میں
کیوں سوچتی ہوں
میں تو تمہاری کوئی نہیں...
مگر تم اب بھی
میری شاموں کو
سوگوار کیوں کرتے ہو؟
میری راتوں کو
بے کنار کیوں کرتے ہو
تم میرا ملال ہو
کہ تم میرا خیال ہو...

जिला-वतन न होतीं तुम्हारी!
लेकिन इश्क़ का रतजगा
आँखों में आँजे
मैं तुम्हारी महबूबा जैसे
क्यों नहीं सोचती?
तुम मेरी मन की दुनिया के
बस अपने थे मेरे थे..
शायद तुम्हारे इंतेज़ार में
मैं इतनी मुक़द्दस हो गई हूं
जैसे मैं महबूबा नहीं
माँ हूं!
लेकिन ये सब मैं
क्यों सोचती हूं
मैं तो तुम्हारी कोई नहीं.....
मगर तुम अब भी
मेरी शामों को
सौगवार क्यों करते हो?
मेरी रातों को
बेकिनार क्यों करते हो
तुम मेरा मलाल हो
कि तुम मेरा ख़्याल हो...

شام
اَن چھوئے من کے بوجھ سے
چیخ رہی ہے
میں اگربتی پہ اگربتی
جلائے جا رہی ہوں!

शाम
अनछुए मन के बोझ से
चटख़ रही है
मैं अगरबत्ती पे अगरबत्ती
जलाए जा रही हूँ!

زندگی کی سانس سے لمبی
تمہاری روٹھ
نہ مہک
نہ اگربتی کے دھوئیں میں
سما رہی ہے...
جگراتے کی سِلوٹوں میں
میری وفا
اونگھ رہی ہے
لاؤ
روٹھ اور وفا کو گوندھ کے
روح کا رباب بناتے ہیں
تارِ ربابِ روح پہ
محبت کا ساز چھیڑتے ہیں
اور سکوتِ شب کو
حُسنِ سخن میں ڈبو دیتے ہیں...
سنو ایسا نہ ہو
جب تیری آنکھ کھلے
تو رات گزر چکی ہو!

333—کتھا رس

ज़िंदगी की साँस से लम्बी
तुम्हारी रूठ
न महक
न अगरबत्ती के धुएं में
समा रही है
जगराते की सिलवटों में
मेरी वफ़ा
ऊंघ रही है
लाओ
रूठ और वफ़ा को गूंध के
रूह का रुबाब बनाते हैं
तारे रुबाब रूह पे
मोहब्बत का साज़ छेड़ते हैं
और सुकूते शब को
हुस्ने सुख़न में डुबो देते हैं...
सुनो ऐसा न हो
जब तेरी आँख खुले
तो रात गुज़र चुकी हो

تمہاری نفرت
وہ محبت ہے
جو تم مجھ پہ
نچھاور نہ کر سکے
میری تنہائی

❋

तुम्हारी नफ़रत
वो मोहब्बत है
जो तुम मुझपे
निछावर न कर सके
मेरी तंहाई

دُھن ہے
اُن محبتوں کی
جن کا تعارف کروانا
سمے بھول گیا
کہ جو
تمہاری فالج زدہ
حس سے
منہ موڑ کے
بے رنگ میں نے
وصول کیں!
تمہاری نفرت زدہ محبت کو
میں یوں گنگناتی ہوں
جیسے کوئی
ادھورے گیت کی لے پر
اپنی دھڑکن گنگناتا ہو
میری باوفا محبت
تمہاری بے عبادت محبت کے سجدے میں
کب تک رہے گی
من کی آنکھ کھول دو
دنیا کی آنکھ
بے وضو ہے

धुन है
उन मोहब्बतों की
जिनका तआरुफ़ करवाना
समय भूल गया
कि जो
तुम्हारी फ़ालिज ज़दा
हिस से
मुंह मोड़ के
बेरंग मैंने
वसूल कीं!
तुम्हारी नफ़रत ज़दा मोहब्बत को
मैं यूं गुनगुनाती हूँ
जैसे कोई
अधूरे गीत की लय पर
अपनी धड़कन गुनगुनाता हो
मेरी बावफ़ा मोहब्बत
तुम्हारे बे-इबादत मोहब्बत सजदे में
कब तक रहेगी
मन की आँख खोल दो
दुनिया की आँख
बे वज़ू है

❁

لڑتے کیوں ہو

تمہارے خوابوں کی وحشت

میرے کانوں کا زیور نہیں

چیخیں ہیں!

میرا گلہ

منگل سوتر کی چھون سے

بے خبر ہے

میری آنکھوں سے

लड़ते क्यों हो
तुम्हारे ख़्वाबों की वहशत
मेरे कानों का ज़ेवर नहीं
चीख़ें हैं!
मेरा गिला
मंगल सूत्र छुवन से
बे-ख़बर है
मेरी आँखों से

عورت کے آنسو نہیں
محبت کی دُکھن بہہ رہی ہے!
اَن سُنے وجود کی دُکھن
بے زبانی ہوتی ہے
محبت
بے زبانی کا نہیں
من بانی کا ہنر ہے...
تمہاری زبان کا کوئی من نہیں
صرف کان ہیں
من صرف اور صرف
محبت کی کھنک میں بولتے ہیں!
محبت اور وفا کی مٹی سے
گوندھی گئی میں
نفرت اور شک کے مجسمے تم
کیسے تحلیل ہوں گے،
لاؤ یہی سوچتے ہیں
دیکھو میں
تمہیں سوچتے سوچتے
نیست و نابود ہو رہی ہوں
تم اپنے ہونے کا جشن
کس کے سنگ مناؤ گے؟

औरत के आंसू नहीं
मोहब्बत की दुखन बह रही है!
अनसुने वजूद की दुखन
बे-जुबानी होती है
मोहब्बत
बे-जुबानी का नहीं
मन मानी का हुनर है...
तुम्हारी जुबान का कोई मन नहीं
सिर्फ़ कान हैं
मन सिर्फ़ और सिर्फ़
मोहब्बत की खनक में बोलते हैं!
मोहब्बत और वफ़ा की मिट्टी से
गुंधी गई मैं
नफ़रत और शक के मुजस्समे तुम
कैसे तहलील होंगे!
लाओ यही सोचते हैं
देखो मैं
तुम्हें सोचते सोचते
नीस्त-व-नाबूद हो रही हूं
तुम अपने होने का जश्न
किसके संग मनाओगे?

رابطے میں نے نہیں
اُداسیوں نے توڑے
اُداسیوں کی اتنی ساری کھیتیاں
بودی گئی تھیں
کہ زندگی

राबते में मैंने
उदासियों से तौड़े
उदासियों की इतनी सारी खेतियाँ
बो दी गई थीं
कि ज़िंदगी

رابطے میں نے نہیں
اُداسیوں نے توڑے
اُداسیوں کی اتنی ساری کھیتیاں
بودی گئی تھیں
کہ زندگی

राबते में मैंने
उदासियों से तौड़े
उदासियों की इतनी सारी खेतियाँ
बो दी गई थीं
कि ज़िंदगी

اُداسیوں کی ہریالی میں
چھپ گئی
اور میں
تنہائی کے الاؤ میں
جھلستی رہی
بھیدوں بھری چُپ
مجھے سہلاتی رہی
چپ کا ایک سکھ ہے
اور بھیدوں کا اپنا دُکھ!
پر روح اور جسم کے رشتوں کو
منسوخ کرنا
ایک دل دوز المیہ ہے!
المیہ کو حوصلہ بنانا
عمر کھا جاتا ہے...
گھر میں نے خواب میں
اور رشتے
تیمارداری میں دیکھے تھے
روح اور جسم کے رشتوں سے
بچھڑنے کا صدمہ
میرے حوصلہ کے سامنے بونا ہے

उदासियों की हरियाली में
छुप गई
और मैं
तंहाई के अलाव में
झुलसती रही
भेदों भरी चुप
मुझे सहलाती रही
चुप का एक सुख है
और भेदों का अपना दुख!
पर रूह और जिस्म के रिश्तों को
मंसूख़ करना
एक दिल-दोज़ अलमिया है!
अलमिया को हौसला बनाना
उम्र खा जाता है...
घर मैंने ख़्वाब में
और रिश्ते
तीमारदारी में देखे थे
रूह और जिस्म के रिश्तों से
बिछड़ने का सदमा
मेरे हौसला के सामने बौना है

❋

روٹی کے قحط میں Ethupian جیسے
میرا وجود
باہمی تعاون کے قحط میں
سکڑ چکا ہے!
کٹے پھٹے پاپوش میں

रोटी के क़हत में Ethupian जैसे
मेरा वजूद
बाहमी तआवुन के क़ह्त में
सिकुड़ चुका है
कटे फटे पापोश में

پیر نہیں

میری ہمت ہے

کائنات

غیر مستحکم جوتوں میں چل رہی ہے

ہر شئے اپنی حقیقت کھو چکی ہے!

میں

رحم کی اپیل کی طرح

مسترد ہو چکی ہوں

زندگی کی پکڑ سے نکل چکی ہوں...

تعاون

اپنا اپنا بیڑا

پار کرنا نہیں

ایک ساتھ غرق ہونا ہوتا ہے!

لازمی ہے

کہ زندگی کی بیاض سے

لفظ تعاون ہٹا کے

کہیں غرق کر دیا جائے

اور اپنائیت کو

آزاد کر دیا جائے

पैर नहीं
मेरी हिम्मत है
काइनात
ग़ैर मुस्तहकम जूतों में चल रही है
हर शय अपनी हक़ीक़त खो चुकी है!
मैं
रहम की अपील की तरह
मुस्तरद हो चुकी हूं
ज़िंदगी की पकड़ से
निकल चुकी हूं...
तआवुन
अपना अपना बेड़ा
पार करना नहीं
एक साथ ग़र्क़ होना होता है!
लाज़िमी है
कि ज़िंदगी की बयाज़ से
लफ़्ज़ तआवुन हटा के
कहीं ग़र्क़ कर दिया जाए
और अपनाइयत को
आज़ाद कर दिया जाए

✵

تنہا سفر
تلووں میں نہیں
من میں چھالے ڈالتا ہے!
پاؤں پاؤں سفر میں مشغول
زندگی نہیں

✲

तंहा सफ़र
तलवों में नहीं
मन में छाले डालता है!
पाँव पावँ सफ़र में मशगूल
ज़िंदगी नहीं

سفر پاٹتے ہیں!
اگلے سفر سے پہلے
بے شک تم نے
تمام یادوں کے پُرزے
Airport پہ
Dustbin میں ڈال دیئے ہوں
صابن کی ٹکیہ سے لگا تمہارا بال
ہٹا ہی نہیں
بہت سارا پانی بہا کے بھی نہیں!
بہت سارے لمحے
تمہاری قرب کی یاد میں
درماندہ ہیں
محبت کے سفر میں ساتھ چلنا
Out of Date ہو گیا ہو
محبت
اِن وقتوں میں بھی
وجود کی تھکن
انوکھے زاویوں میں
چھپا دیتی ہے
اور سچ تو یہ ہے کہ
محبت

सफ़र पाटते हैं!
अगले सफ़र से पहले
बेशक तुमने
तमाम यादों के पुरज़े
Airport पे
Dustbin में डाल दिए हूं
साबुन की टिकिया से लगा तुम्हारा बाल
हटा ही नहीं
बहुत सारा पानी बहा के भी नहीं!
बहुत सारे लम्हे
तुम्हारी कुर्ब की याद में
दरमांदा हैं
मोहब्बत के सफ़र में साथ चलना
Out of Date हो गया हो
मोहब्बत
इन वक़्तों में भी
वजूद की थकन
अनोखे ज़ावियों में
छुपा देती है
और सच तो ये है कि
मोहब्बत

دولتِ نایاب ہے!
جس دولت کی تلاش میں
ہم سات سمندر پاٹتے ہیں
وہ ہمیں
دل میں تو نہیں رکھتی
ہم سے ہماری گفتگو
نہیں کرتی!
محبت من کی سچائی ہے
جھوٹ پر یقین
نہ رکھنے والے لوگ
دستیاب نہیں
جو لوگ
Green Card ملنے کو
اعزازی سند سمجھتے ہوں
وہ
لفظوں کا سچ سمجھنے سے
قاصر ہیں

दौलते नायाब है!
जिस दौलत की तलाश में
हम सात समुद्र पाटते हैं
वह हमें
दिल में तो नहीं रखती
हमसे हमारी गुफ़तगू
नहीं करती!
मोहब्बत मन की सच्चाई है
झूठ पर यक़ीन
न रखने वाले लोग
दस्तयाब नहीं
जो लोग
Green Card मिलने को
एज़ाज़ी समझते हूं
वह
लफ़्ज़ों का सच समझने से
क़ासिर हैं

کسی من کی بانہیں نہیں تھیں!
میری محبت
ہوا کے سنگ
ننگے پاؤں در بدر
چلتی رہی؛ بکھرتی رہی

किसी मन की बांहें नहीं थीं
मेरी मोहब्बत
हवा के संग
नंगे पाँव दरबदर
चलती रही बिखरती रही

ہوا کبھی
محبت کی مانگ نہیں بھرتی!
رات
سندور کی ڈبیا کو تکتی ہے
دن
روٹی بیلتا ہے
ہوا رات دن
مزاج لفظ روٹھ
ہمارا نصیب بُنتے ہیں!
ہم نصیب کیوں جیتے ہیں؟
سوالیہ سے لٹکی ہوئی زندگی کو
بے لباس ہونے سے کون بچائے گا... اب کوئی ماں
چرخا نہیں کاتتی؛ روٹی نہیں بیلتی
اپنا Figure سنوارتی ہیں اور
Ego جیتی ہیں!
میں من کی بانہیں کھوجتی ہوں!
میری فتح ناممکن ہے
جہاں فتح پانا ناممکن ہو
وہاں ایک لفظ
فتح کی شکل اختیار کر لیتا ہے
"منحوس وقت"

हवा कभी
मोहब्बत की माँग नहीं भरती!
रात
सिन्दूर की डिबिया को तकती है
दिन
रोटी बेलता है
हवा रात दिन
मिज़ज लफ़्ज़ रूठ
हमारा नसीब बुनते हैं!
हम नसीब क्यों जीते हैं?
सवालिया से लटकी हुई ज़िंदगी को
बे-लिबास होने से कौन बचाएगा... अब कोई माँ
चरख़ा नहीं कातती? रोटी नहीं बेलती
अपना Figure संभालती हैं और
Ego जीती!
मैं मन की बांहें खोती हूं!
मेरी फ़त्ह नामुमकिन है
जहाँ फ़त्ह पाना नामुमकिन हो
वहाँ एक लफ़्ज़
फ़त्ह की शक्ल अख़्तियार कर लेता है
"मंहूस वक़्त"

وقت کب تک اپنی نحوست
کسی نگ میں، ننھی دعا میں
تسبیح کے دانوں میں یا
رحل کے سائے میں
چھپا سکتا ہے؟
سرد تنور میں
سناٹے کی چیخ
گونج رہی ہے
کہ میں بغیر محبت کے
بے کار وجود کو
جی نہیں سکتی...
میں نظم سے
اپنی قبر بنا سکتی ہوں
بغیر محبت کے
زندگی گزارنے کی قسمت پر
رضا اختیار نہیں کر سکتی!

वक़्त कब तक अपनी नहूसत
किसी नग में, नन्ही दुआ में
तस्बीह के दानों में या
रिहल के साऐ में
छुपा सकता है?
सर्द तन्नूर में
सन्नाटे की चीख़
गूंज रही है
कि मैं बग़ैर मोहब्बत के
बेकार वजूद को
जी नहीं सकती...
मैं नज़्म से
अपनी क़ब्र बना सकती हूं
बग़ैर मोहब्बत के
ज़िंदगी गुज़ारने की क़ीमत पर
रज़ा अख़्तियार नहीं कर सकती!

❁

وفا
یک طرفہ
آنسو بن جاتی ہے
تابعداری
اَن سُنی میں
زخم بن جاتی ہے
آنسو اور زخم
عورت ہوتی ہے

❁

वफ़ा
एक तरफ़ा
आँसू बन जाती है
ताबेदारी
अनसुनी में
ज़ख़्म बन जाती है
आँसू और ज़ख़्म
औरत होती है.

مرد صرف اور صرف
مزاج ہوسکتا ہے
اِس دِلدوز فرق کو ہم
رِشتوں میں چھپاتے ہیں
اور ایک دوجے کا لباس بن کر
بس کافر نہیں ہوتے
بے لباس ہوجاتے ہیں
بے لباس ہونے کی وحشت میں
کِسی ہُنر میں منہ چھپاتے ہیں
اور محسن ہمارے کہتے ہیں
اُسے زندگی میں آگے جانے کی خواہش ہے
کوئی یہ نہیں کہتا
کہ وہ بھی انسان ہے
کوئی یہ نہیں سوچتا
کہ وہ میری پوشاک ہے
کوئی یہ نہیں سمجھتا
کہ وہ میری لاج ہے
کوئی یہ نہیں مانتا
کہ وہ رشتوں کا تقدس ہے
کوئی یہ نہیں جانتا
کہ وہ میرا نصف آدھا ہے

365—کتھارس

मर्द सिर्फ़ और सिर्फ़
मिज़ाज हो सकता है
इस दिलदोज़ फ़र्क़ को हम
रिश्तों में छुपाते हैं
और एक-दूजे का लिबास बनकर
बस काफ़िर नहीं होते
बेलिबास हो जाते हैं
बेलिबास होने की वहशत में
किसी हुनर में मुंह छिपाते हैं
और मोहसिन हमारे कहते हैं
उसे ज़िंदगी में आगे जाने की ख़्वाहिश है
कोई ये नहीं कहता
कि वो भी इंसान है
कोई ये नहीं सोचता
कि वो मेरी पोशाक है
कोई ये नहीं समझता
कि वो मेरी लाज है
कोई ये नहीं मानता
कि वो रिश्तों का तक़द्दुस है
कोई ये नहीं जानता
कि वो मेरा निस्फ़ आधा है

٭

میں اولیاؤں کی تجربہ گاہ
کہتے ہیں خدا مجھ سے خوش ہے
لوگ روٹھے ہوئے ہیں...
میں لوگوں سے بدگماں ہوں
قدرت سے بےزار نہیں—
اعتبار بونے کے موسم گزر گئے
طوفانی موسم کی موسیقی
میرے اندر چیختی ہے

❀

मैं औलियाओं की तर्जुबागाह
कहते हैं ख़ुदा मुझसे ख़ुश है
लोग रूठे हुए हैं...
मैं लोगों से बदगुमाँ हूं
कुदरत से बेज़ार नहीं-
ऐतबार बोने के मौसम गुज़र गए
तूफ़ानी मौसम की मौसीक़ी
मेरे अंदर चीख़ती है

لوگوں کا جھوٹ
سچ کا روپ دھار چکا ہے؟
میرا نصیب بن چکا ہے!
اپنے جھوٹ کو صداقت بنانے والے
میری چھت توڑنے کی خاطر
کسی کو مامور کر دیں
ایسا میں نے کب سوچا تھا!
وفا اُمیدیں اور عشق کچلنے والے
زندگی کا مفہوم بدل دیں
ایسا بھی تو نہیں سوچا تھا!
سر اونچا کروں
وفا کی اوڑھنی اوڑھوں
بس اتنا ہی سوچا تھا!
... نصیبوں کے ستم دیکھوں
زمانے کا کرم دیکھوں
اور زندگی کی تاریکیوں میں
گم ہو جاؤں
ایسا بالکل نہیں سوچا تھا!
ہاں اتنا دیکھا تھا
کہ کوئی دنیا
ایک ہی آنکھ سے دیکھتا ہے!

लोगों का झूठ
सच का रूप धार चुका है?
मेरा नसीब बन चुका है!
अपने झूठ को सदाक़त बनाने वाले
मेरी छत तौड़ने की ख़ातिर
किसी को मामूर कर दें
ऐसा मैंने कब सोचा था!
वफ़ा उमीदें और इश्क़ कुचलने वाले
ज़िंदगी का मफ़हूम बदल दें
ऐसा भी तो नहीं सोचा था!
सर ऊँचा करूँ
वफ़ा की ओढ़नी ओढ़ूँ
बस इतना ही सोचा था!
...नसीबों के सितम देखूँ
ज़माने का करम देखूँ
और ज़िंदगी की तारीकियों में
गुम हो जाऊँ
ऐसा बिल्कुल नहीं सोचा था!
हाँ इतना देखा था
कि कोई दुनिया
एक ही आंख से देखता है!

یہ کیسا درد ہے
کہ چوٹ نہیں بھولتا
زخم بھر چکا ہے
جہاں سے رِستا تھا
وہاں اب داغ ہے
داغ زخم کی یاد میں
مجھے اکثر
اُتار دیتا ہے!

ये कैसा दर्द है
कि चोट नहीं भूलता
ज़ख़्म भर चुका है
जहाँ से रिस्ता था
वहाँ अब दाग़ है
दाग़ ज़ख़्म की याद में
मुझे अक्सर
उतार देता है!

مجھے
فرار بھری جوتیوں نے پہن لیا
اور ایک سفر
ایجاد کیا...
میرے ساتھ

❋

मुझे
फ़रार भरी जूतियों ने पहन लिया
और एक सफ़र
ईजाद किया...
मेरे साथ

میری خاموشی ہے؛
اک بے سوادی ہے
باقی سب
خواب عشق وفا
نیندیں
سب کچھ جاگیرداری کے
کونے کھدروں میں
پڑے ہوئے ہیں!
خاموشی کے دامن سے
وفا کا دامن بڑا ہوتا ہے
پیروں کے چھالے پڑنے پر
وفا کی طلب بڑھتی ہے
میں مور کی مانند
اپنے پیر دیکھ کر
روتی ہوں
میرے قدم
مجھے واپس کردو
انتقال سے پہلے
میں اپنا دل
کہیں بو دینا چاہتی ہوں

375—کتھارس

मेरी ख़ामोशी है;
इक बे-सवादी है
बाक़ी सब
ख़्वाब इश्क़ वफ़ा
नींदें
सब कुछ जागीरदारी के
कोने खुदरों में
पड़े हुए हैं!
ख़ामोशी के दामन से
वफ़ा का दामन बड़ा होता है
पैरों के छाले पड़ने पर
वफ़ा की तलब बढ़ती है
मैं मोर की मानिंद
अपने पैर देख कर
रोती हूँ
मेरे क़दम
मुझे वापस करदो
इंतिक़ाल से पहले
मैं अपना दिल
कहीं बो देना चाहती हूँ-

مرغی چوزے کو تھپڑ نہیں مارتی
پر پھیلاتی ہے؛ بجلی چمکتے ہی!
بارش برسنے تک
چوزے ڈھک چکے ہوتے ہیں
جو نہیں ڈھکتا

मुर्ग़ी चूज़े को थप्पड़ नहीं मारती
पर फैलाती है; बिजली चमकते ही!
बारिश बरसने तक
चूज़े ढक चुके होते हैं
जो नहीं ढकता

وہ کاندھے پہ چڑھ جاتا ہے
مرغی چوزے کو کاندھے سے
نہیں اُتارتی
ہمیں گود سے اُتار کر
موجوں پہ تنہا بٹھا دیا جاتا ہے
زندگی کے پر پھڑ پھڑانے پر بھی ہم
سرگوشیوں میں جیتے ہیں!
مرغی دانہ دِکھنے پر
کُڑک کُڑک کی دُھن میں
چوزوں کو اکٹھا کرتی ہے...
ہمیں خاموشی سے
لاسمتیت کی جوتیاں پہنا کر
درد کی وادیوں میں
بھٹکا دیا جاتا ہے!
سوچتی ہوں کب میری روح
میرے بدن کو اُتار دے
اور مرغی کے انڈے میں
پناہ لے...

वो कांधे पे चढ़ जाता है
मुर्ग़ी चूज़े को कांधे से
नहीं उतारती
हमें गोद से उतार कर
मौजों पे तंहा बिठा दिया जाता है
ज़िंदगी के पर फड़फड़ाने पर भी हम
सरगोशियों में जीते हैं!
मुर्ग़ी दाना दिखने पर
कुड़ुक कुड़ुक की धुन में
चूज़ों को अकट्ठा करती है...
हमें ख़ामोशी से
लासिमतियत की जूतियां पहना कर
दर्द की वादियों में
बिठा दिया जाता है!
सोचती हूँ कब मेरी रूह
मेरे बदन को उतार दे
और मुर्ग़ी के अंडे में
पनाह ले...

इन्तिसाब

(समर्पण)

क़य्यूम तारिक़

के नाम

पहला संस्करण : 2008

मूल्य : रु. 250.00

प्रकाशक : इस्तेआरा पब्लीकेशंज़
53–ए, ज़ाकिर बाग़, ओखला रोड
नई दिल्ली – 110025

CATHARSIS

(Poems)

By: Dr. Shabnam Ashai
Ashai Manzil, Tapar Pattan - 193121
(J&K) INDIA

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

कथारसेस

(नज़्में)

डा० शबनम अशाई

इस्तेआरा पब्लीकेशंज़
53-A, ज़ाकिर बाग़, ओखला, नई दिल्ली–25

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ये किताब जम्मू कश्मीर अकेडमी ऑफ़ कल्चर एंड लैंगवेजेज़ के माली तआवुन से शाया की गई।

कथारसेस

(नज़्में)

डा० शबनम अशाई

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure



I have dreamed in my life, dreams that have stayed with me ever after, and changed my ideas, they have gone through and through me, like wine through water and altered the color of my mind.

–Emily Bronte

نظمیہ شاعری کے باب میں معاصر تخلیقی افق پر نسائی حسیت کے حوالے سے جو چند نام نمایاں ہیں ان میں شبنم عشائی بھی شامل ہیں اور خاص بات یہ ہے کہ گم ہوتے چہروں کی بھیڑ میں بھی ان کی شاعری کا اپنا مخصوص چہرہ ہے اور احساس و اظہار کا رنگ بھی مختلف ہے۔

شبنم عشائی نظموں میں اپنے Limbic System اور ارتعاشی حسیت کے ساتھ موجود ہیں۔ اپنی وجودی صورت حال اور حیات و کائنات کے انتشار کو انہوں نے تخلیقی آہنگ اور اظہار عطا کیا ہے۔

نظموں میں ان کے وجود کی کائنات موجزن ہے۔ ان کی داخلی دنیا کے مدوجزر سے آشنائی کا وسیلہ یہی نظمیں ہیں جو ان کے رومان، خوابِ شکست خواب، درد اور جذبہ کی شدت اور حدت سے عبارت ہیں۔ شبنم عشائی نے اپنے ذہن کے مدرکہ اور غیر مدرکہ امیجز کو جو تخلیقی رنگ و روپ عطا کیا ہے۔ وہ ان کے تخیل کی زرخیزی اور داخلی توانائی کا ثبوت ہیں۔

شبنم عشائی کی نظموں سے ان کے neuronal responses کا بھی پتہ چلتا ہے۔ یہ نظمیں ان کے جذباتی اور ذہنی کیفیات کی عکاس ہیں اور ان کے باطن کے تموج و تلاطم کا پتہ دیتی ہیں۔

شبنم عشائی کی نظمیہ شاعری میں عذابِ جاں بھی ہے، عذاب زندگی بھی اور پھر یہ احساس بھی کہ جی خوش ہوا ہے راہ کو پرخار دیکھ کر۔ غموں سے لذت کشید کرنے کا ہنر انہیں آتا ہے۔ انہوں نے غم کو بھی نشاط زیست کا ایک جزو بنالیا ہے۔

'من بانی' سے 'کیتھارسس' تک شبنم عشائی نے ایک طویل تخلیقی مسافت طے کی ہے اور اس کے نشانات بھی ان کی شاعری میں روشن ہیں۔ پہلے للہ عارفہ کے باطنی آہنگ سے شبنم کا تخلیقی وجود منور تھا اور اب ان کے تخلیقی تجربے اور تخیل میں غنی کاشمیری کا سوز دروں اور وحشت جنوں بھی شامل ہے۔ شبنم عشائی کی شاعری میں رومانی احساس کے ساتھ روحانی ماورائیت اور سریت بھی سرایت کرگئی ہے جس کی وجہ سے ان کی نظمیہ شاعری میں انفس و آفاق کی وہ دھڑکنیں سما گئی ہیں جو ان کے آہنگ اور احساس کو اعتبار عطا کرتی رہیں گی۔

—حقانی القاسمی

Design at : GALAXY COMPUTERS, New Delhi. 3254879



I have dreamed in my life, dreams that have stayed with me ever after, and changed my ideas, they have gone through and through me, like wine through water and altered the color of my mind.

–Emily Bronte

نظمیہ شاعری کے باب میں معاصر تخلیقی افق پر نسائی حسیت کے حوالے سے جو چند نام نمایاں ہیں ان میں شبنم عشائی بھی شامل ہیں اور خاص بات یہ ہے کہ گم ہوتے چہروں کی بھیڑ میں بھی ان کی شاعری کا اپنا مخصوص چہرہ ہے اور احساس و اظہار کا رنگ بھی مختلف ہے۔

شبنم عشائی نظموں میں اپنے Limbic System اور ارتعاشی حسیت کے ساتھ موجود ہیں۔ اپنی وجودی صورت حال اور حیات و کائنات کے انتشار کو انہوں نے تخلیقی آہنگ اور اظہار عطا کیا ہے۔ نظموں میں ان کے وجود کی کائنات موجزن ہے۔ ان کی داخلی دنیا کے مدوجزر سے آشنائی کا وسیلہ یہی نظمیں ہیں جو ان کے رومان، خوابِ شکست خواب، درد اور جذبہ کی شدت اور حدت سے عبارت ہیں۔ شبنم عشائی نے اپنے ذہن کے مدرکہ اور غیر مدرکہ امیجز کو جو تخلیقی رنگ و روپ عطا کیا ہے۔ وہ ان کے تخیل کی زرخیزی اور داخلی توانائی کا ثبوت ہیں۔

شبنم عشائی کی نظموں سے ان کے neuronal responses کا بھی پتہ چلتا ہے۔ یہ نظمیں ان کے جذباتی اور ذہنی کیفیات کی عکاس ہیں اور ان کے باطن کے تموج و تلاطم کا پتہ دیتی ہیں۔

شبنم عشائی کی نظمیہ شاعری میں عذابِ جاں بھی ہے، عذاب زندگی بھی اور پھر یہ احساس بھی کہ جی خوش ہوا ہے راہ کو پرخار دیکھ کر۔ غموں سے لذت کشید کرنے کا ہنر انہیں آتا ہے۔ انہوں نے غم کو بھی نشاط زیست کا ایک جزو بنالیا ہے۔

'من بانی' سے 'کیتھارسس' تک شبنم عشائی نے ایک طویل تخلیقی مسافت طے کی ہے اور اس کے نشانات بھی ان کی شاعری میں روشن ہیں۔ پہلے للہ عارفہ کے باطنی آہنگ سے شبنم کا تخلیقی وجود منور تھا اور اب ان کے تخلیقی تجربے اور تخیل میں غنی کاشمیری کا سوز دروں اور وحشت جنوں بھی شامل ہے۔ شبنم عشائی کی شاعری میں رومانی احساس کے ساتھ روحانی ماورائیت اور سریت بھی سرایت کرگئی ہے جس کی وجہ سے ان کی نظمیہ شاعری میں انفس و آفاق کی وہ دھڑکنیں سما گئی ہیں جو ان کے آہنگ اور احساس کو اعتبار عطا کرتی رہیں گی۔

ـــــحقانی القاسمی

Design at : GALAXY COMPUTERS, New Delhi. 3254879